प्रेमचन्द और भारतीय समाज

डा. मीना कुमारी
सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय,कृष्ण नगर

[illegible] की समूची बहस, जो प्रेमचन्द की परम्परा के नाम पर पिछले पचास–साठ वर्षो से हिन्दी में चल रही है। दो [illegible] कि कलावादी अभिजात खेमे द्वारा प्रेमचन्द का यह नकार महज संयोग न होकर 'प्रेमचन्द्र की प्रासंगिकता' को ही दृश्य [illegible] करने का सायास उपक्रम था। 'क्योंकि संघर्ष के बिना प्रेमचन्द की जीवन दृष्टि की व्याख्या नहीं की जा सकती, अन्याय के [illegible] संघर्ष और इस संघर्ष के पक्ष और विपक्ष दोनों के प्रति जो दृष्टिकोण बनता है। उससे यह स्पष्ट होता है कि संवेदना शत्रु [illegible] नहीं संवेदना मित्र के प्रति है, मित्र वर्गो के प्रति है।'

प्रेमचन्द का साहित्य उन नैतिक मूल्यों के टकराव का मार्मिक स्थल है। जहाँ अतीत के मूल्य वर्तमान से टकराते है, जहां [illegible] वर्तमान, यथार्थ से टकराता है और उनके साथ जुड़े आर्थिक मूल्य भी राजनीतिक मूल्य भी, नैतिक मूल्य भी। [illegible] नैतिक मूल्य कहकर के, संघर्ष को हम नैतिक आधार देकर भले ही प्रभामंडित करना चाहे लेकिन राजनीतिक और आर्थिक [illegible] या [illegible] आयाम का निशध करके हम मनुष्य के बहुत बड़े भाग का अपमान कर रहे हैं। उसका संकट तो राजनीतिक और [illegible] संघर्ष से ही दूर होगा।

[illegible] – भारती की दासता से मुक्त होने वाले संघर्ष का प्रतिबिंब 'श्रीकांत' है या 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि और 'गोदान' है।

प्रेमचन्द को राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन का महागाथाकार मानने में कोई अतिश्योक्ति नहीं है। प्रेमचन्द जी की पहली कहानी [illegible] का सबसे अनमोल रतन' से लेकर 'गोदन' तक स्वाधीनता आंदोलन की विविध अर्थछवियां तलाशते हैं और इसे अंतविरोधों [illegible] की पहचान करते है। प्रेमचन्द का दृष्टिकोण सुधारवादी या आदर्शवादी तो था ही साथ में उनके साहित्य को [illegible] विरोधी होने के साथ–साथ सामंतवाद विरोधी भी है। 'प्रेमाश्रम' में प्रेमचन्द ने दिखाने की कोशिश की कि साम्राज्यवाद [illegible] हुकूमत के विरूद्ध लड़ने का प्रश्न जब भी खड़ा होगा, तो उसके साथ अंग्रेजी हुकूमत, जिनके बल पर देश में टिकी [illegible] सामंती तत्वों के विरूद्ध लड़ने का प्रश्न भी सामने आएगा। जब तक सामंतवाद का विरोध नही होगा तब तक [illegible] विरोध नहीं हो सकता। प्रेमचन्द जी की यही स्थापना उन्हे समाज–सुधारकों से अलग ले जाती है।

अक्सर प्रेमचन्द जी को गांधीवादी करार देकर उनकी व्यापक भूमिका और सरोकारों को सीमित किया जाता है। प्रेमचन्द [illegible] गांधीवाद का रूपांतर नहीं कर रहे थे, बल्कि गांधीवाद ने उस समाज में, उस समय जो लीलाए की थी, उन सारी [illegible] लीला–गान लिख रहे थे। अतः प्रेमचन्द के साहित्य में केवल गांधीवाद की गहरी छाप देखना और गांधी जी के [illegible] की छाया देखना और यह कहना कि अंत में न सही तो आरम्भिक दिनों में वे गांधीवादी थे ही, ऐसा कहना उनके [illegible] सरासर गलत हैं। उनके साहित्य के साथ ज्यादती है, ये सही है कि भारतीय आजादी की लड़ाई मे अगर किसानों की [illegible] को किसी ने समझा तो राजनीति मे गांधी जी ने और साहित्य में प्रेमचन्द ने। महत्व को समझने के बाद रास्ता यहां से [illegible] है। प्रेमचन्द किसानों के महत्व को समझने के बाद जमींदार के खिलाफ किसान के संघर्ष को उभारते है, जबकि [illegible] जमींदारों के खिलाफ किसान के संघर्ष को दबाते है छिपाते है भले ही प्रेमचन्द किसान जीवन के चितेरे होने के बावजूद [illegible] 'किसानवादी नहीं थी। वे भारतीय किसान के अंतविरोध को कथात्मक बनाते हुए स्वयं अंतर्विरोधों के शिकार नहीं थे। [illegible] किसान भाग्यवादी होता है, प्रेमचन्द भाग्यवादी नही थे प्रेमचन्द के विचारों की भूमि भारतीय किसानों की भूमि है। किन्तु [illegible] जमीन में पैदा होने के बावजूद प्रेमचन्द भारतीय किसान की अनेक कमजोरियों से मुक्त हुए थे, जैसे भाग्यवाद, अंधविश्वास, [illegible] का भय दब्बूपन इन तमाम चीजो को देखते हुए कहा जा सकता है कि वे वर्ग–चेतन भारतीय किसान की जीवन–दृष्टि [illegible] विकसित रूप थे।

हम यह समझने की कोशिश करे कि प्रेमचन्द जिस समय और समाज में जिये और जिसे बदलने के लिए उन्होंने [illegible] संघर्ष किया, उसमें दलित समस्या का रूप क्या था? सामाजिक स्तर पर इस समस्या के रूप में क्या तब्दीलियां आई और [illegible] के अपने चिंतन और सर्जन में वे किस रूप में अभिव्यक्त होती हैं'।

प्रेमचन्द की ग्राम केन्द्रित कहानियों में पचास फीसदी कहानियां छोटी जाति को लेकर लिखी गई है। अथवा पिछड़ी जाति [illegible] लेकर लिखी गई है। किसानों में भी जो सबसे छोटी जाति का था, उसको आगे करके, उसकी समस्याओं को उजागर करके [illegible] रहे थे, जब देश की वामपंथी पार्टियां मजदूरों को संगठित करने में लगी थी, व भारतीय किसानों में सबसे निचले [illegible] आर्थिक और सांस्कृतिक बदहाली को सामने रखते हुए साहित्य रच रहे थे।' यह करते हुए प्रेमचन्द उस भारतीय संरचना [illegible] रच रहे थे, जहां विशमता और शोषण महज वर्ग आधारित न होकर वर्ण आधारित भी थी। जिस प्रकार प्रेमचन्द की [illegible] सद्गति' और ठाकुर का कुआं' का 'पूरक' कहानियां करार देते है। क्योंकि सद्गति एक पुरोहित के अत्याचार की कहानी [illegible] है और 'ठाकुर का कुआं' एक राजपूत जमींदार के अत्याचार की कहानी करती है। इससे स्पष्ट होता है कि इस देश के

ISSN: 2320-351x

...ब्राह्मणों और राज्य करने वाले क्षत्रियों ने मिलकर बाकी वर्गों का लूटने की कोशिश की। प्रेमचन्द की इन दोनों कहानियों ... देखने से ये परिदृश्य हमारे सामने आता है।

...नामवर सिंह जैसा यह ध्यान दिलाते है कि यह आकस्मिक नहीं है कि प्रेमचन्द की प्रथम और अंतिम रचना के केन्द्र में ... प्रेमचन्द के साहित्य में यह भी देखने को मिलता है कि पूंजी, धर्म, राजनीतिक सत्ता–मिलकर धर्म का जो रूप बनता था, ... का समर्थक था, प्रेमचन्द उसे पहचान गए थे। यहां यह भी देखने में आता है कि गांधी जी से प्रेमचन्द का मत अलग ... है–जब तक जाति–पाति की व्यवस्था नहीं तोड़ी जाएगी, तब तक दलितों को मुक्ति नहीं मिलेगी। और उसकी ... धार्मिक पाखंड है।

...दलित कहानियां में 40 कहानियां संकलित है। जो पूर्णतः दलित जीवन से सम्बधित है। इन दलित कहानियों में ... के जीवन व उनकी दशाओं के संबंध में प्रेमचन्द ने महत्वपूर्ण मुद्दे उठाए है। जिनकी चर्चा हमेशा विद्वानों द्वारा की ...

...चालीस कहानियों के संबंध मे स्वयं डा. गोयनका लिखते है कि 'प्रेमचन्द की दलितोत्थान की चिंता उनकी राष्ट्रीय ... है। यही कारण है कि वे वर्ष 1911 से 1936 तक निरंतर दलित जीवन पर कहानियां लिखते रहे। प्रेमचन्द का ... व्यापक और वैविध्यपूर्ण है। इसमे केवल अस्पृश्य जातियां का ही दर्द नहीं है, बल्कि वे सब निम्न जातियां है, जो ... का अंग है। इस सम्बंध में स्वामी विवेकानन्द की जो दृष्टि थी, वही प्रेमचन्द की है।

प्रेमचन्द के दलित विमर्श में चमार, भंगी, बंजारे, अनाथ, दाई, गोंडिन, भुनगी, महारिन, धोबी, मदारी–मदारिन, घासिमारा ... भगत, कंजड़, गरीब, गुंडा, घसियारिन, नौकर आदि अनेक निम्न जातियों का समाज है। और उनके पात्र एवं उनके ... जीवन की कहानियां है। उनका साहित्य समाज बड़ा ही व्यापक एवं वैविध्यपूर्ण संसार है। इसमें तिरस्कृत, पीड़ित, ... सभी नीच जातियां है। वे चाहे अस्पृश्य है या स्पृश्य पर वे सभी दलित है।

गांधी जी ने उस समय 'हरिजन' नाम से अखबार शुरू किया था, लेकिन अब जाति विशेष के लिए हरिजन शब्द का ... है लेकिन इसके लिए हम आज गांधी जी को अपराधी नहीं बना सकते । गांधी जी के समय में 'हरिजन' शब्द ... था, अर्थात हरि का जन, इसी प्रकार आज 'दलित' शब्द पर कोई आपति नहीं है। लेकिन कल इसे आपतिजनक मान ... जाएगा।

प्रेमचन्द भारतीय सामंतवाद की 'निज विशिष्टता' को उद्घाटित करते हैं और यह बताते चलते हैं कि ब्रिटिश प्रशासन ने ... प्रकार इस सामन्तवाद का इस्तेमाल किया। अछूत समस्या की जड़े जिस सामंतवाद हिंदू समाज में थी। उनकी उचित ... किए बिना इससे मुक्ति का रास्ता नहीं मिल सकता था। प्रेमचन्द ने इसी राह की खोज की थी। यह हिन्दी साहित्य के ... में एक तथ्य है। कांतिमोहन ने इस पुस्तक में ब्रिटिश अछूत नीति पर एक पूरा अध्याय ही लिखा है। इसमें उन्होंने अंग्रेजों ... अछूत नीति को तीन मुख्य बिंदुओं की चर्चा की है, जो बेहद महत्वपूर्ण है:–

... की संख्या कागज पर बढ़ा दी जाए।

... होने वाले अत्याचारों का अतिरंजित वर्णन करके विश्व जनमानस पर यह छाप छोड़ने की कोशिश की जाए कि ...–पीड़ित तबकों की रक्षा के लिए इस देश में ब्रिटिश साम्राज्यवादियों का रहना कितना जरूरी और मानवीय है।

... जातियों को अपने पक्ष में जीतकर राष्ट्रीय आंदोलन की शक्ति को कमजोर कर दिया जाए।

प्रेमचन्द ने अंग्रेजों की इन नीतियों का पर्दाफाश करते है। प्रेमचन्द पहले ऐसे लेखक–चिंतक है, जो राष्ट्रीय आन्दोलन को ... के लिए यह आवश्यक मानते है कि उसमें दलितों और स्त्रियों की मजबूत भागीदारी हो। 'कर्मभूमि' में मुन्नी के साथ हुए ... के माध्यम से अंग्रेजों के उस मुखौटे को भी उतारते है। जिसे पहनकर वे अपने को सभ्य और उन्नत कहा करते थे।

प्रेमचन्द को इतना श्रेय तो देना ही होगा कि एक विचारक की हैसियत से अछूत समस्या पर गांधीवादी नजरिये से देखते ... उसकी राष्ट्रीय और आर्थिक अंतर्वस्तु को लगातार रेखांकित करते रहे। अपनी इसी विशेषता के कारण वह 1934 के ... भी वह उसकी ... गांधीवादी चिंतन–परिधि का अतिक्रमण भी कर सके। अछूत समस्या कोई अलग–थलग समस्या नहीं हैं उसकी समाप्ति ... भारतीय जनता के आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक संघर्ष से ही संभव है। और प्रेमचन्द यही सोचते और मानते हैं।

'उपन्यास की संरचना' में गोपाल राय ने ईवान वॉट का उदाहरण देते हुए बताया कि 'सच्चे उपन्यासकार का प्रमुख ... अपने जीवन–साधना से उपलब्ध व्यक्तिगत अनुभवों का सच्चा और ईमानदारी पूर्ण प्रभावोत्पादक विवरण देना है। प्रेमचन्द ... उपन्यासों की यथार्थवादी संरचना पर विमर्श के पूर्व यहां स्वयं प्रेमचन्द के तद्‌विशयक विचारों को जानना आवश्यक है कि ... भविष्य में उपन्यास में कल्पना कम सत्य अधिक होगा, हमारे चरित्र कल्पित न होगें, बल्कि व्यक्तियों के जीवन–चरित्र पर आधारित ... भावी उपन्यास जीवन चरित्र होगा, चाहे किसी बड़े आदमी या छोटे आदमी का, किसी किसान का चरित्र हो या देशभक्त का, ... उसका आधार यथार्थ होगा। तब यह काम उससे कठिन होगा। जितना अब है, क्योंकि ऐसे बहुत कम लोग हैं, जिन्हे बहुत से मनुष्यों को भीतर से जानने का गौरव प्राप्त हो'।

प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में यह भी दिखाया है कि सामन्तवाद अपने अन्तर्विरोधों के कारण दिनोदिन जर्जर हो रहा है। ... जमींदार केवल किसानों का शोषण करता है जबकि पूंजीपति ... पूंजीवाद उसी की जीवन शक्ति को चूस कर पनप रहा है। ... और उसके दलाल जमींदारों, किसानों और मजदूरों, सबका शोषण करते है।

ISSN: 2320-351x

Patliputra Journal of Indology

[illegible] सच है कि प्रेमचन्द साहित्य क्षेत्र मे अपने पूर्ववर्तियो एवं समकालीनो से कई सीढी आगे थे और प्रेमचन्द युग [illegible] सुधारवादी आंदोलनो का युग था। आर्य समाज के द्वारा सामाजिक सुधार का आंदोलन चल रहा था। गांधी जी [illegible] मंच पर उपस्थित थे एवम् तमाम सामाजिक, धार्मिक रूढ़ियो के प्रति संघर्षरत थे। प्रेमचन्द इन आंदोलनों के साथ थे। [illegible] साहित्य मे उपदेशक के मंच से एकाएक उतर नही सके। अतः अपने अनुभूत सत्य को तटस्थ भाव से पाठकों के [illegible] समय लगा। किन्तु धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। लेकिन आज भी बहुत से साहित्यकार प्रेमचन्द को विवादों मे [illegible] कोशिश करते है। कुछ लोगो का तो यहा तक कहना है कि प्रेमचन्द की रचनाओं को पाठ्यक्रम से तुरन्त हटा देना [illegible] इससे स्कूल जाने वाले बच्चो मे उच–नीच की भावना आ सकती है।

[illegible] साहित्य का बहुत सा विमर्श जो बाद मे प्रमुखता से उभरा चाहे वह दलित साहित्य हो या नारी साहित्य उसकी [illegible] प्रेमचन्द के साहित्य मे दिखाई देती है।

[illegible] दौर मे उनकी चेतना गांधीवाद से प्रेरित थी, इस बात को सभी जानते है वे जिन समस्याओं का हल करना [illegible] सेतिहार किसानो की समस्या हो, या राष्ट्रीयता की समस्या हो। वो सब उसी तरह सोले रहे थे जैसे गांधी जी ले [illegible] जैसे–जैसे वे समाज मे गहरे उतरते गए, उन्हे समझ आने लगा गांधीवाद पूरी तरह से समस्याओं का हल नहीं कर [illegible] कुछ समय तक रहे उसके बाद वे मार्क्सवाद के ज्यादा करीब आ गए थे। यही कारण है कि उनके साहित्य में [illegible] जीवन व उनकी दशाओ के सम्बंध मे प्रेमचन्द ने महत्वपूर्ण मुद्दे उठाए है। जिनकी चर्चा हमेशा विद्वानों द्वारा की [illegible] प्रेमचन्द की दलितोत्थान की चिंता उनकी राष्ट्रीय चिंताओ मे से है। इसका यही कारण है कि वे लगातार दलित [illegible] साहित्य लिखते रहे ।

[illegible] और भारतीय समाज को लेकर लंबे समय से बहस होती रही है लेकिन इसमें कोई दो राय नहीं है कि प्रेमचन्द [illegible] भारतीय समाज को समझने मे मुकम्मल दृष्टि प्रदान करता हैं उनका लेखन हिन्दी साहित्य की एक ऐसी विरासत है। [illegible] हिन्दी के विकास का अध्ययन अधूरा होगा। आगामी एक पूरी पीढ़ी को गहराई तक प्रभावित कर प्रेमचन्द ने साहित्य [illegible] परंपरा की नींव रखी। वे एक संवेदनशील लेखक,सचेत नागरिक, कुशल वक्ता तथा विद्वान संपादक थे।

निष्कर्ष:

मुंशी प्रेमचन्द भारतीय समाज की सच्चाईयों के सबसे बड़े चितेरे है। उन्होंने अपनी कहानियो और उपन्यासो मे समाज [illegible] के सुख–दुख का इतना महिन वर्णन किया है, वह विश्व स्तरीय साहित्य की अमूल्य निधि है। उन्होंने विसंगतियों [illegible] के बीच जीने वाले आम इन्सान नायकत्व से महिमा मंडित किया है। उनका साहित्य समाजिक और आर्थिक [illegible] तरह–तरह के शोषण और मनुष्य की नियति का मार्मिक दस्तावेज हैं नैतिक मूल्यों और मानवीयता मे आ रही गिरावट [illegible] के लिए जरूरी है कि हम आधुनिक संचार माध्यमो के इस युग मे प्रेमचन्द जैसे साहितत्यकारो के साहित्य से जुडे रहे। [illegible] पठन–पाठन व मनन करें।

प्रेमचन्द की वसीयत सोजे वतन से शुरू होकर कफन तक आई प्रेमचन्द का साहित्य सीधे जनता से संवाद करता है। [illegible] ने प्रेमचन्द को धरती का अमूल्य रत्न कहा है। उनके साहित्य को गांधीवादी विचारधार से प्रेरित आदर्शोन्मुख [illegible] का साहित्य कहना ही पूर्ण सत्य नही है। प्रेमचन्द की कहानी 'खूनी' हमें भगत सिंह के क्रांतिकारी दर्शन से जोडती है [illegible] अपनी सर्वोतमकृति 'गोदान' मे शोषणवादी महाजनी सभ्यता और समाजिक आडम्बरों की विकृतियों को समाज के [illegible] किया है। प्रेमचन्द आज भी सामाजिक लगते है क्योंकि उन्होंने समाज के आधारभूत सुधारो को रेखांकित किया जहा [illegible] हो गया था।

प्रेमचन्द हिन्दी के उन थोडे लेखको मे से एक है। जिनके साहित्य पर अलग–अलग कोणो से विचार किया गया है। [illegible] दलित विमर्श का आरम्भ हुआ तो सबसे पहले चर्चा मे प्रेमचन्द ही आए, क्योंकि हिन्दी साहित्य के 1936 तक के [illegible] एसे लेखक है, जिसने दलित परिवार मे जन्म तो नही लिया लेकिन जिसने उनकी पीडा और संघर्ष को पूरी [illegible] वाणी दी। दलित विमर्श से जुडे कुछ विमर्शकारो ने प्रेमचन्द की घनघोर आलोचना की तो कुछ ने यह भी माना कि [illegible] आदर्श ही नही, प्रेरणास्त्रोत भी है। आगामी एक पूरी पीढ़ी को गहराई तक प्रभावित कर प्रेमचन्द ने साहित्य की [illegible] परंपरा की नींव रखी। उनका लेखनहिन्दी साहित्य की एक ऐसी विरासत है जिसके बिना हिन्दी के विकास का अध्ययन [illegible] प्रेमचन्द का कहना था कि साहित्यकार देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं बल्कि उसके आगे [illegible] दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है। गोदान उनकी कालजयी रचना है भारतीय समाज की विसंगतियों पर करारी चोट [illegible] है और आदर्श जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है उन्होंने जहा एक ओर अंध–परंपराओ पर चोट की वही सहज मानवीय [illegible] और मूल्यों को भी खोजने का प्रयास किया। सच्चे अर्थो मे प्रेमचन्द की सहज–सुगम लेखनी आज भी उतनी ही [illegible] है, जितनी अपने रचनाकाल मे थी।

 ISSN: 2320-351x

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[illegible] और भारतीय समाज लेखक नामवर सिंह, प्रकाशक–राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.दरियागंज, नयी दिल्ली–110002।

[illegible] और दलित विमर्श लेखक कांतिमोहन प्रकाशक–स्वराज प्रकाशन 7 / 14 गुप्ता लेन, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली।

[illegible] संरचना लेखक–गोपाल राय।

[illegible] दलित कहानियां लेखक– कमल किशोर गोयनका प्र. सस्ता साहित्य मंडल कनाट सर्कस नयी दिल्ली–1100001

Associate Professor
H.E.S.-I
Govt. College, Narnaul

ISSN 2320–768X
Impact Factor : 1.113
IC Value 6.48

UPSTREAM

RESEARCH INTERNATIONAL JOURNAL
A PEER REVIEWED REFEREED INDEXED JOURNAL
APPROVED BY UGC NEW DELHI
UGC JOURNAL SERIAL NO. 46753

Vol. VI

Issue II, April – 2018

ISSN 2320-768X, Impact Factor : 1.113
Vol. VI, Issue II (April – 2018)

14. **Concept of True Happiness in Today's Materialistic World** 91
Sugandha Kohli

15. **स्त्री चेतना के नए आयाम** 96
डॉ. मीना कुमारी

16. **स्त्री विमर्ष का सामाजिक आर्थिक संदर्भ** 105
नीलम सिंह

17. **वैश्विक परिप्रेक्ष्य के सन्दर्भ में "समाज एवं भाषा"** 110
डा. बिमला लाठर

18. **ध्वनि अभिलेखन का संगीत जगत एवं संगीत शिक्षण में योगदान** 114
Dr. Ashok Kumar

19. **भारत में लोकतांत्रिक समाजवाद की अवधारणा : जवाहर लाल नेहरू का योगदान एवं प्रासंगिकता** 117
डॉ. मुकेश कुमार

20. **उदय प्रकाश जी का कविताओं में चित्रित युग निर्माण की कल्पना** 129
नीलम

21. **आधुनिक हिंदी काव्य में राष्ट्र–भक्ति** 133
सुनीता रानी

22. **साहित्य और सामानान्तर सिनेमा** 138
शलिनी सिंह

Upstream Research International Journal (URIJ)
A Peer Reviewed Refereed Indexed Journal, Approved by UGC New Delhi
ISSN 2320-768X, Impact Factor : 1.113
Vol. VI, Issue II (April - 2018)

स्त्री चेतना के नए आयाम

डॉ. मीना कुमारी
सहायक – प्रोफसर (हिन्दी)
राजकीय महाविद्यालय कृष्णनगर, (महेन्द्रगढ़) हरियाणा

स्त्री चेतना के तीन आयामों को सहज ही रेखांकित किया जा सकता है। स्त्री–लेखन, स्त्री–विमर्श और स्त्री–मुक्ति संघर्ष। इनमें प्रथम सृजनात्मक है, जो आरंभ से अब तक गतिशील है, द्वितीय विचारात्मक है। जिसका स्वर आधुनिक है और तृतीय कियात्मक है, जो अति आधुनिक है। किंतु आज के दौर में तीनों ने मिलकर साहित्य से समाज तक एक नया परिदृश्य खड़ा कर दिया है। जिससे स्त्री की परिस्थितियॉ बदली है जीवन में नए परिवर्तन हुए हैं, किंतु इससे द्वंद्व भी बढ़े है। लेकिन द्वंद्व में भी सहजीवन के लोकतंत्रीय तरीकों को आत्मसात करना चाहती है। स्त्री चेतना के आयामों पर विस्तारपूर्वक चर्चा में सर्वप्रथम हम स्त्री–लेखन विषय पर विमर्शात्मक लेखन की चर्चा करेगे।

यह स्त्री चेतना का प्रथम आयाम । जो सृजनात्मक है। लेखिकाओं के लेखन से ज्ञात होता है कि विमर्शात्मक लेखन में समन्वय की विराट चेष्टा दिखाई देती है। स्त्री–लेखन के इतिहास में कवयित्रियों की कमी नहीं रही। मीराबाई और आंडाल से लेकर महादेवी वर्मा तक एक लम्बी परम्परा देखने को मिलती है। किंतु छायावाद के बाद कविता के क्षेत्र में स्त्री लेखिकाओं की कमी दिखाई देती है। लेकिन स्वतन्त्रता के बाद समकालीनता के दौर में अनेक कावयित्रियॉ साहित्य के क्षेत्र में आती दिखाई देती है और इनकी कविताओं में भोगे हुए यथार्थ और अनुभव की प्रमाणिकता का प्रभाव दिखाई देता है। इन कवयित्रियों ने स्त्री–जीवन के यथार्थ को अभिव्यक्त करने का कार्य किया।

लेखिकाओं के लेखन में ज्ञात होता है कि तत्कालीन स्त्री चिंतन पर गांधीवाद का गहरा असर है। कई मनः सामाजिक कारणों से कवयित्रियों के लिए 'गद्यः कविनां निकषः वदन्ति' यह निकषः और भी चुनौतीपूर्ण रहा है। आख्यात्मक गद्य और ललित गद्य को हिन्दी कथाकारों की तीन पीढ़िया एक साथ आगे बढ़ा रही है। पर विमर्शात्मक गद्य के साथ पद्य में भी सफल लेखन किया है। ईश्वरी देवी जी 'हिन्दी रत्न' लिखती है, 'भारतीय स्त्रियों की मनोदशाओं में बहुत परिवर्तन हो गया है। अब ऊँचे घराने की कन्या उच्च शिक्षा प्राप्त कर स्वयं स्वतंत्र आजीविका प्राप्त करने की अभिलाषा रखती है। वे व्यापार करना, वकालत करना, सभा–समितियों, सरकारी कमीशनों और कौंसिलों आदि में भाग लेना इत्यादि अनेक काम करने को उत्सुक है। अब वह अपने को घर की चारदिवारी में कैद नही समझती'।

आधुनिक युग में स्त्री–लेखन को माध्यम बनाने वाली प्रमुख लेखिकाओं में कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, मन्नू भंडारी, अमृता प्रीतम, प्रभा खेतान, अर्चना त्रिपाठी, चित्रा, कुसुम अंसल, मृणाल पाण्डे, प्रभा कांकरिया, गीतांजलि आदि के नाम आद से लिए जा सकते है।

वर्तमान सदी की स्त्री लेखिकाओं ने अपने लेखन में आधुनिक स्त्री जीवन के व्यापक आयामों को स्पर्श करते हुए स्त्री सम्बन्धी अनेक पुराने व नए प्रश्नों को उठाया है जिसमें बहुविवाह, भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, तलाक, सांप्रदायिक उपद्रव, पृथक राष्ट्रीयता का उन्माद, दाम्पत्य जीवन के बदलते संबंध–संदर्भ, पारिवारिक मूल्यों व मान्यताओं में बदलाव, परिवेश के प्रति सजगता तथा अपने पर हो रहे अन्याय का प्रतिशोध, आदि लेखन ने नए नारी मूल्यों को गढ़ा, उसे एक पहचान दी। आजादी की लड़ाई के समय के जो स्वर साहित्य में उभरा उसमें देशकालिक परिस्थितियाँ और देश–प्रेम की अभिव्यक्ति स्पष्ट लक्षित होती है। सुभद्रा कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, सरोजनी नायडू, उषा देवी मित्रा आदि कई लेखिकाओं ने अपने समय को अभिव्यक्ति प्रदान की। और उनके सशक्त लेखन का योगदान हिन्दी साहित्य को प्राप्त हुआ।

स्त्री–विमर्श पर जब की चर्चा उठी है तो वह गरमा–गरम बहस पर जाकर थमी है। जिस पर अक्सर मतभेद होते रहते है कोई इसे स्त्री–देह का विर्मश मानता है तो कोई स्त्री की स्वतन्त्रता का। स्वयं स्त्रियाँ इसे क्या मानती है इस पर भी छिटपुट मतभेद देखने को मिल जाते हैं। किंतु बहुप्रतिशत लोग यही मानते हैं कि यह विमर्श स्त्री की समुचित स्वतन्त्रता का है।

'विमर्श'का अर्थ हुआ– 'जीवंत बहस' – किसी भी समस्या या स्थिति को एक कोण से न देखकर भिन्न मानसिकताओं, दृष्टियों, संस्कारों और वैचारिक प्रतिबद्धताओं का समाहार करते हुए उलट–पुलट कर देखना, उसे समग्रता में समझने की कोशिश करना।

प्रो0 रोहिणी अग्रवाल के अनुसार स्त्री–विमर्श का अर्थः–स्त्री को केन्द्र में रखकर समाज, संस्कृति, परम्परा एवं इतिहास का पुनरीक्षण करते हुए स्त्री की स्थिति पर मानवीय दृष्टि से विचार करने की अनवरत प्रकिया।' स्पष्ट है कि स्त्री विमर्श के अर्न्तगत अतीत या समकालीनता प्रमुख नहीं रहती। वरन् भूत वर्तमान एवं भविष्य तीनों को एक–दूसरे की अन्विति एवं संगति में विश्लेषण करने का भाव प्रधान रहता है।

मध्यकालीन भारतीय समाज में नारी सदैव अपने अधिकारों से वंचित रही है। क्योंकि हिन्दू समाज पितृ सतात्मक समाज का प्रभत्व रहा है। हमने महिलाओं की वेदना और चीख को अपनी लेखनी के द्वारा आवाज प्रदान की है। किसी भी समाज के सुसंस्कृत होने की पहचान नारी से होती है। जब–जब नारी का गौरवमय इतिहास अपनी महत्ता छोड़ने लगा है, तब–तब नारी ने उस महत्ता को प्राप्त करने के लिए संघर्ष किया है। यही संघर्ष नारी मुक्ति का रूप ले लेता है।

हिन्दी साहित्य के आदिकाव्य की बात करे तो इसमें नारी के कामिनी एवं वीरागंना रूप दृष्टिगत होते है। इस समय के काव्य में निम्न कहावत चरितार्थ होती है। 'जाकि बिटिया सुन्दर देखी ताहि पै जाए धरे हथिया'

भक्तिकाल के कवियों ने नारी चित्रण मुख्यतः दो रूपों में हुआ। एक ओर वह उदात आदर्श आराध्य के रूप में दूसरी ओर एक सामान्य नारी के रूप में नारी को मुक्ति मार्ग में बाधक बताया है। कबीर का मत है कि 'नारी की झॉई परत अंधा होत भुजंग'। सुन्दरदास का मत है कि 'नारी विष का अंकुर, विष की बेल है।' इस सबसे यही विदित होता है कि इन्होंने

ISSN 2320-768X, Impact Factor : 1.113
Vol. VI, Issue II (April - 2018)

नारी के केवल कामिनी रूप को देखा है उसके मातृत्व एवं पतिपरायण रूप को नहीं। साथ ही तुलसीदास जैसे कवियों ने नारी को ताड़न की अधिकारी मानते हुए उसे पशुतुल्य स्वीकार किया। सूफी कवियों के अनुसार नारी प्रेम एवं उपासना की वस्तु है। सूरसागर के प्रथम खण्ड में कृष्णकथा वर्णन के पूर्व कवि नारी को नागिन से अधिक भयंकर मानता है।

रीतिकालीन कवियों ने रूप–यौवन के आकर्षण की आंधी में नारी के रूप का ही वर्णन है। इन कवियों की दृष्टि केवल नारी के नख–शिख उसकी मासंल देह पर ही ठहरी थी। आधुनिक काल में भारतेन्दु इस नवचेतना के अग्रदूत बनें। नारी शिक्षा के प्रचार–प्रसार हेतु 'बालवबोधिनि' नामक पत्रिका का प्रकाशन किया। इस कार्य में पुरूषों के साथ स्त्री लेखिकाओं का योगदान भी बहुत अधिक मिला, नवजागरण की इसी प्रभाती में स्त्री–पुरूष दोनों के स्वर सम्मिलित थे।

द्विवेदी युगीन कवियों ने माना की स्त्री को सम्मान दिए बिना उन्नति नहीं हो सकती। छायावादी काव्य मूलतः श्रृंगारी काव्य है।

छायावाद में महादेवी वर्मा स्त्री केन्द्रित निबंधो के द्वारा आत्मप्रबंधक समाज को चुनौती देते हुए स्त्री–पुरूष की रूढ़ छवियों और मिथकों के कुहासे को तोड़ पाई है। महादेवी वर्मा के लिए स्त्री धर्म का पालन स्त्री होने की पहली और अंतिम शर्त है। इसलिए अनुभव व सक्रियता की आग उनमें दिखाई देती है।

आधुनिक समय में स्त्री लेखिकाओं ने अपने लेखन से आधुनिक स्त्री जीवन के व्यापक आयामों को स्पर्श करते हुए स्त्री संबंधी अनेक पुराने व नए प्रश्नों को उठाया है, कस्बों, गांवों , शहरों से लेकर दूरदराज के देशों में काम करने वाली स्त्रियों के त्रासद अनुभवों को शब्द प्रदान किए है इस सदी की लेखिकाओं ने प्राचीन ग्रन्थों के नारी पात्रों को नए चिंतन के अनुरूप उनका मूल्याकंन भी किया है।

आदिकाव्य में स्त्री–मुक्ति संघर्ष बीज के रूप में था। क्योंकि उस समय स्त्रियों के कारण राजा महाराजाओं के भी युद्व हो जाते थे। वीरागंना नारी अपने जीवन की सार्थकता अपने स्वामी के वीरोचित कर्मो में ही समझती थी। उसका पति वीरगति का प्राप्त हो जाए तो वह उसी के साथ ही मरने को तैयार हो जाती थी।

भक्तिकाल में मीराबाई का पितृस्तात्मक समाज के विरूद्व जाकर अपनी निजता के अनुरूप जीवन यापन करना। यहॉ मीरा की भावना नारीत्व की भावना थी। जो पूर्णतः चाहती थी। किंतु उससे नारी के स्वतन्त्र एवं सक्षम अस्तित्व का बोध कदापि नहीं हो पाता ऐसे काव्य में प्रेम विरह है।

रीतिकाल कवियों ने नारी को सिर्फ एक प्रेमिका के रूप में वर्णित किया, पत्नीत्व की गरिमा के दर्शन तो कही भी नहीं मिलते।

रोहिणी अग्रवाल की मान्यता है कि परंपरागत आलोचना मीरा काव्य के मर्म को पहचानने में असफल रही है। उनकी दृष्टि में मीरा की अभिव्यक्ति को नजर अंदाज करके उन्हें कबीर, सूर, तुलसी जैसे भक्त की श्रेणी में स्थान देना उनके विद्रोह के स्वर को नजर अंदाज करना है। एक औसत स्त्री की तरह मीरा सरल हृदया तो है। लेकिन ज्ञान पिपासु होना कदाचित उसकी विवशता है। वह जब डंके की चोट पर यह कहती है, 'अपने घर का पर्दा कर लो, मैं

अवस्था बौराती। तो उसे हताशा के गर्भ से फूटता विद्रोह और मनुष्यत्व की रक्षा के लिए पितृसत्तात्मक व्यवस्था की पुर्नसरचना का कदम मानती है। ये उनकी मुक्ति की राहो के अन्वेषण का संघर्ष है, और उन राहो पर अविराम चलने की संकल्प दृढता भी'

स्त्री–लेखन स्त्री की आकांक्षाओं का दर्पण है। यह स्त्री की मानवीय इयत्ता को पाने और जीने का स्वप्न है। सम्पूर्ण संसार की औरतों की तीन तस्वीरे – प्रथम उन औरतों की है जो अपने साहस क्षमता और अपनी योग्यता को साबित करके पुरूषों के बराबरी करती हुई प्रथम पंक्ति में आ गई। दूसरी, तस्वीर उन औरतों की है जिनका समर्य स्वरूप साहित्य और विचारों की दुनिया में गढ़ा गया है। ये औरतें सम्पूर्ण स्त्री के सांचे में ढ़ली हुई है इनमें स्त्रियोचित लावण्य है, ये अपने जीवन का ढ़ंग से जी पाती है, इनका अपने शरीर व मानस पर अधिकार है और ये पुरुष की सहयोगी, सहचरी और पूरक के रूप में सामने आती है। औरत की तीसरी तस्वीर वह है जिसमें औरते प्रताड़ना के साए में है और अब भी संघर्षरत है...वे स्वयं आज्ञानी वह अपने अधिकारोंसे बेखबर है 'भारतेन्दु जी ने नर–नारी समानता एवं नारी मुक्ति का नारा दिया। इस समय के कवियों ने तो यहॉ तक कह दिया कि माता और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर होती है। लेखिकाओं के लेखन में सामाजिक सरोकारों और संघर्षो को उजागर करते हुए विशिष्टता पाई है। इस प्रकार स्त्रियों की वेदना ही नारी मुक्ति की जन्मदात्री है। यह वेदना पूरे समाज की स्त्रियों की वेदना है जरूरत है समाज को बदलने की जो स्त्रियों की इस वेदना को समझ सके। लेखिकाओं ने इसी वेदना को अपने काव्य में उकेरा है। जिन्हें पढ़कर स्त्रियों की इस वेदना को समझा जाए तथा उन्हें पुरूषों के समान भागीदारी दी जा सके। पूरे विश्व की स्त्रियां आज भी दोयम दर्जे की नागरिक बनी हुई है। स्त्री शोषण के नाम पर पूरे संसार की औरत एक मंच पर आए, एकजुटता का परिचय दें। वर्तमान सदी की लेखिकाएं विश्वव्यापी और समंकित स्त्रीक्रांति की पैरवी करती नजर आती है।

हिन्दी की कथा लेखिकाएँ जिन टेढ़ी–मेढ़ी पगडंडियों से तथा बीहड़ घाटियों से गुजरकर पुरुष की चट्टानी शक्तियों का सामना कर रही थी, उनमें सबसे आगे चलने वाली का नाम है कृष्णा सोबती, बीसवीं शताब्दी के उतराई की लेखिकाओं में अधिक सशक्त, मुखर, आकामक एवं बोल्ड लेखन के लिए कृष्णा सोबती सबसे भिन्न और सबसे सार्थक नाम है। सोबती जी की कहानियों में नारी–चरित्र की प्रधानता है। 'बादलों के घेरे' पुस्तक में अनेक कहानी है। 'बादलों के घेरे' की मन्नों हो या 'जिगरा की बात' कहानी की शेरे की मॉ–दोनों ही अपनी विषम परिस्थितियों में कही भी परिस्थिति से हार मानती नही दिखती। 'दोहरी सॉझ' में परिवार और समाज के बन्धनों में जकडी उस स्त्री का भी चित्रण मिलता है जो अपने परिवार की इच्छा के आगे अपने प्रेम का गला घोंट देती है, 'कुछ नहीं कोई नहीं' कहानी में सोबती जी ने पति और प्रेमी के मध्य उलझी स्त्री की कुठां, निराशा और घुटन को प्रस्तुत किया है। 'दादी अम्मा' कहानी एक भरे पूरे परिवार की कहानी है। 'न गल था, न चमन था' कहानी में जया, माधुरी और नादिरा दस्तुर के माध्यम से अविवाहित कामकाजी स्त्रियों के अकेलेपन और उदासी को व्यक्ति किया गया है। 'एक दिन' में सोबती जी ने प्रेम त्रिकोण

ISSN 2320-768X, Impact Factor : 1.113
Vol. VI, Issue II (April – 2018)

की समस्या को उठाया है और भी अनेक पुस्तके उनके द्वारा लिखी गई जैसे– 'ऐ लड़की', 'डार से बिछुडी', मित्रों मरजानी, 'सूरजमुखी अँधेरे के, 'यारों के यार तिन पहाड', 'जिन्दगीनामा,' 'दिलोदानिश' ' हम दशमत', ' सोबती एक सोहबत', आदि पुस्तकों पर अपनी सफल लेखनी चलाई।

वस्तुः कृष्णा सोबती का कथा–साहित्य अपने युग की नारी की परिस्थितियों एवं समस्याओं का सच्चा दर्पण है। अपने युग की हर वर्ग की नारी की आशा–आकांक्षा, दुख–सुख और मनोभावों को सोबती जी ने अपनी कहानियों में चित्रित किया है। एक घरेलू स्त्री चाहे वह 'बहन' हो या 'दादी अम्मा' से लेकर वेश्या, साध्वी, कामकाजी महिला, विभाजन से त्रस्त स्त्री प्रायः उन्होंने हर स्त्री की समस्या को अभिव्यक्त करने का कौशल दिखाया है। इनकी कहानियों में हमें त्रिकोणात्मक संघर्ष भी देखने को मिलता है। सोबती जी के नारी पात्र निजी समस्याओं से जूझती हुई कहीं भी हताश नहीं दिखती। सोबती जी का कथा साहित्य नारी चेतना को नई दिशा और दशा प्रदान करता है।

कुसुम त्रिपाठी द्वारा रचित 'औरत इतिहास रचा है तुमने भारत में स्त्री आन्दोलन का संक्षिप्त इतिहास है। स्त्री–आन्दोलन की विशेषज्ञ त्रिपाठी खुद भी स्त्री–आन्दोलन से जुड़ी रही है। इसलिए उनमें आंदोलन की आग है और यह आग किसी राजघराने की राजसी नेत्री को ताप सुख देने वाली नहीं, बल्कि उनमें खुद को तपाकर, जलाकर स्त्री इतिहास को कुंदन की तरह चमकाने वाली सामान्य स्त्रियों की आग है, जो आदिवासी थी, अछूत थी। इसमें केवल दलित व आदिवासी आंदोलनो का लेखा–जोखा ही नहीं है। अपितू नई सूचनाओं के साथ स्त्री संघर्षों में समिर्पित स्त्रियों एवं घटनाओं का विस्तार से वर्णन है।

मैत्रेयी पुष्पा स्त्री की स्वतन्त्रता, इच्छा और अस्मिता जैसे नए मूल्यों को समाज के समक्ष खड़ा करती है। स्त्री के अस्तित्वहीन व्यक्तित्व को प्रमुख और निर्णायक व्यक्तित्व में बदलने के लिए वह समाज से भी लड़ती है बुंदेलखण्ड जहॉ आज भी स्त्री शिक्षा को उतनी महत्ता प्रदान नहीं की जाती जितनी की पुरूष शिक्षा को। 'खिल्ली' गॉव में पलने–बढने वाली मैत्रेयी न केवल 'शिक्षा' बल्कि 'राजनीति' को भी स्त्री के अधिकारों में शामिल कर देती है। यहॉ मैत्रेयी का सवाल यह है कि क्या ज्ञान पर पुरूषों ने अपना पेटेन्ट करवा रखा है। मैत्रेयी जैसा साहस आज हर स्त्री को करना होगा। स्त्री को बनी–बनायी परम्परा में देखने की बात तो समाज करता है। लेकिन उप परम्पराओं से उबारने की नहीं। आखिर कयों? कब यह समाज स्त्री को उसका हक देगा? उसे भी इन्सान समझेगा? आखिर कब इन सभी प्रश्नों को कहानियों और उपन्यासों में उठाया है। मैत्रेयी जी की 'फैसला' कहानी में वसुमति का अन्तिम फैसला समाज को नई दिशा देता है। मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा कलाकृति से बढ़कर 'जीवन की घुटन' है। आत्मकथा का पहला भाग 'कस्तूरी कुंडल बसै, स्त्री के हक में कस्तूरी और मैत्रेयी का अविश्रांत युद्व है। दूसरा भाग 'गुड़िया भीतर–गुडिया' सभ्यता में निहित असभ्यताओं का एक ऐसा दर्दनाक दस्तावेज है, जिसके पन्ने 'सदाचार' के खून से लाल है,

मैत्रेयी स्त्री के इन्हीं अधिकारों के लिए लड़ती समानता, न्याय, आजादी, हक, अधिकार, अस्तित्व और आत्मनिर्भर जैसे नए मूल्यों को गढ़ती है। मैत्रेयी

ISSN 2320-768X, Impact Factor - 1.113
Vol. VI, Issue II (April - 2018)

की लड़ाई समाज से नहीं, बल्कि उन नियमों, उन मूल्यों से है, जो उसे चैन से जीने नहीं देते है। तरह-तरह के फतवे जो उसे जीने का हक ही छीन लेते है। मैत्रेयी ऐसे ही फतवों का निषेध करती है।

प्रकृति ने वरदान स्वरूप स्त्री को सृजनात्मक शक्ति प्रदान की है आज बाजार इतना हावी हो गया है कि मातृत्व भी बेच रही है औरतें 'सरोमेट मदर्स' बनकर। इस पुस्तक में मैत्रेयी जी की सर्जनात्मक चेतना के साथ-साथ उनकी रचना प्रक्रिया भी निहित है। उनकी रचनाओं को समझने के लिए एक खिड़की है यह किताब। मैत्रेयी जी अपने कथा साहित्य में सबसे अधिक जोर पात्रो को गढ़ने में देती है, उनका मानसिक गठन करने में। वे कहीं भी चरित्र-चित्रण नहीं करती कहने का तात्पर्य यह है कि स्त्रियों को आदर्श के चस्में से देखा जाता रहा है। अब वे रूढ़िया टूट रही है। स्त्री लेखिकाएं। आज स्त्रियों का चरित्र चित्रण नहीं किया जाता, स्त्री पात्र के रूप में उसकी पूरी स्वाभाविकता, उसकी चेतना, उसकी अस्मिता, उसकी आकांशा चित्रित की जाती है। यह काम मैत्रेयी जी बखूबी करती है।

इसी श्रृंखला में विभा गुप्ता द्वारा रचित 'दहेज के कॉटे' दहेज एक सामाजिक बुराई है। इस सामाजिक बुराई से आज जो दर्द भरी तस्वीरें बन रही हैं उनसे समाज ही नहीं, सारा देश भी कॉप उठा है इस पुस्तक के अध्याय 'दहेज के कांटे, 'जली हुई लाश, 'नरक का दण्ड', 'दहेज की रकम', दहेज की वेदी पर, वर का रहम, 'पश्चाताप', दहेज का पाप', 'विधवा बहू', दूसरा विवाह', 'साहस भरा काम', आदि स्त्री-आन्दोलन सम्बन्धी विभिन्न विषयों पर लेखनी चलाई। पुस्तक में ऐसी दर्द भरी तस्वीरों का चित्र खींचा गया है, जो पाठक को कंपा देता है। साथी ही दहेज की बुराई को मिटाने के लिए क्रांतिकारी कदम भी उठाने की सलाह दी गई है। निश्चित रूप से विभा जी के विचारों से प्रभावित होकर समाज से दहेज की बुराई को नष्ट करने की प्रेरणा मिलेगी।

लेखिकाओं की नारी चेतना में भूमिका विषय पर डॉ. सुधा जैन का नाम उल्लेखनीय है। 'आधुनिक नारी दशा और दिशाए' पुस्तक में आधुनिक नारी की परिभाषा देते हुए कामकाजी, राजनीतिक, समाजसेवी, आदि अनेक वर्गो की महिलाओं का बड़ी बारीकी और प्रभावशाली ढ़ंग से चित्रण ही नहीं किया, बल्कि उनकी समस्याओं को भी उठाया है, और उन समस्याओं को सुलझाने का रास्ता भी सुझाया है।

डॉ. सुधा जैन ने नयी समस्याओं की चर्चा अपने संग्रहित लेखों में की है- जैसे 'तलाक के बाद', 'प्रेमसी ओर पत्नी', 'प्रेम विवाह' डेटिंग, दाम्पत्य जीवन में दरारें क्यों, नारी की मुक्तिः किससे आदि में आधुनिकता और परम्परा में उलझी नारी का बहुत ही सुन्दर चित्रण है। एक जगह वह लिखती है कि 'प्रेयसी रास्ते की भटकन है और पत्नी गंतव्य है, फिर पुरूष को क्या भटकने से रोका नहीं जा सकता? पत्नी अगर यथासाध्य अपने प्रयेसी रूप को नष्ट न होने दे तो संभवतः एक सीमा तक पुरूष को बहकने से रोक सकती है।' इसी प्रकार उन्होंने दहेज वैधव्य, सती प्रथा, अंधविश्वास आदि समाज के अनेक गले-सड़े रीति-रिवाजों की चर्चा की है।

डॉ. सुधा ने आपने लेखों में नारी के प्रति केवल समाज और पुरूष को ही दोषी नहीं ठहराया स्वयं नारी को भी दोषी ठहराया है। जैसे सास बहु के रिश्ते, प्रदर्शन की प्रवृति। शायद इसीलिए वह नारी

ISSN 2320-768X, Impact Factor : 1.113
Vol. VI, Issue II (April - 2018)

मन की भावनाओं को शब्द देने में सक्षम हो पाई है। नारी आज हर कार्य में पुरूष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर सक्रिय है। इस परिवर्तन के साथ अनेक नई समस्याओं ने भी जन्म लिया है। जैसे सम्बंध विच्छेद, बिना विवाह साथ रहना, डेंटिग आदि। नारी की जिस स्वतन्त्रता की बात कर रहे है। वह नारी स्वतन्त्रता यदि मर्यादित हो तो वांछनीय है, इसी कड़ी में संतोष श्रीवास्तव की पुस्तक 'मुझे जन्म दो मॉ' में कन्या भ्रूण–हत्या से लेकर दहेज हत्या और सीता–सावित्री के मिथकों और आधुनिक स्त्रियों की पीड़ाजनक नियति–प्रकृति का साहित्यिक विश्लेषण हुआ है। लेखिका ने किसी रीति–रिवाजों अंधविश्वासों को अपने पर हावी नहीं होने दिया। जो व्रत केवल औरते करती है लेखिका ने उनका भी त्याग किया। स्त्री की गुलामी के प्रतीक–बिछुए, सिंदुर, मंगलसूत्र लेखिका ने कभी नहीं पहने। अगर में शादीशुद्वा के प्रतीक हैं तो पुरूष को हम कैसे पहचाने की वह शादीशुद्वा है। लेखिका बिंदी शुरू से लगाती थी, पति की मृत्यु के बाद भी लगाती है। औरतों का श्मशान घाटा में जाना निषेध माना जाता है। लेकिन संतोष जी अपने पति अन्तिम यात्रा तक साथ दिया। उनकी चिंता को अग्नि दी और उनके फूल प्रवाहित किए।

ऊपर के लबे उद्वरण से स्त्रियों की मनो–सामाजिक पीड़ा, असहमति और विद्रोह भाव को सहज ही समझा जा सकता है। पुस्तक के अध्याय 'मुझे जन्म दो मॉ' में 'कन्या भ्रूण हत्या', बालिका वधू में बालविवाह, 'दहेज की बलिवेदी पर' में दहेज हत्या, 'तुम्हारे जाने पर और पानी की सतह पर' में विधवा समस्या, 'इस सिलसिले में सती प्रथा, 'पितृसता' में स्त्री विरोधी शास्त्रोक्त वचन और चिंतन को बदलने की छटपटाहट, 'विवाह संस्था का ढांचा में विवाह और तलाक समस्या, 'सिलसिला जारी है' में वेश्या और कालगर्ल समस्या, 'दलित औरत' में दलित औरतों पर जुल्म और उनमें गुमनाम संघर्ष, 'शह और मात' में राजनीति में औरत और क्रांति का इतिहास रचा है तुमने आदि से अब तक हुए स्त्री आंदोलन विभिन्न ज्वलन्त विषयों पर अपनी सशक्त लेखनी चलाई।

स्त्री–चेतना के प्रस्थान–बिंदू की लेखिका सुनीता गुप्ता सहज, सचेतन और संवेदनशील नारी, जो अध्यापन से लेखन तक सक्रिय रहकर गृहिणी का दायित्व–भार भी उसी शिद्दत से वहन करती है। कविता और कहानी से शुरू हुई उनकी लेखनी एक साहित्यिक की लेखनी है। इसलिए प्रस्तुत का स्त्री विमर्श स्त्री लेखन का एक साहित्यिक लेखा–जोखा है। स्त्री लेखन और उसकी चेतना के इतिहास को लेखिका ने बड़े ही कलात्मक ढंग से चित्रित किया हैं पुस्तक के अध्याय शीर्षक के अनुरूप 'बिन्दु' से आरंभ होकर 'भोक्ता स्त्री की पीड़ा' तक में बंटे हुए है और बीच में जो 'वृत' विशेष 'पूर्वपीठिका' 'स्त्री द्रष्टा और स्रष्टा' बचे है, उन्हीं में स्त्री चिंतन का सारा संसार अटा–पटा है। बिन्दू शीर्षक में लेखिका ने बीज रूप से पिछडी पीढी की प्राचीन औरतों की पीड़ा को अपनी मॉ के ब्याज से लिया है। 'वृत' में लेखिका ने स्त्री लेखन में कथा साहित्य, खासकर उपन्यास और आत्मकथाओं को पुस्तक का विषय बनाने की प्रस्तावना की है। विशेष शीर्षक अध्याय में स्त्री चेतना के विकास को साहित्य के माध्यम से देखने की प्रतिबद्वताए दुहराई गई है। ये तीनों अध्याय पुस्तक की भूमिकाएं है। 'स्त्री चेतना' पूर्वपीठिका अध्याय में मध्यकालीन मीरा का जीवनवृत और संघर्ष स्त्री चेतना

ISSN 2320-768X, Impact Factor : 1.113
Vol. VI, Issue II (April - 2018)

और आंदोलन के इतिहास का प्रथम स्वर बनकर आया है। मीरा न केवल संघर्ष करती है, बल्कि चुनौती देती है। लेखिका ने मीरा काव्य को आधार बनाकर तत्कालिन सामंतवादी वर्जनाओं और रूढियों के बीच मीराबाई के संघर्षो को चित्रित किया है। और इसी अध्याय में महादेवी आधुनिक स्त्री–चेतना की परिपूर्ण दृष्टि बनकर आती है।

आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री–विमर्श को उतर–गाथा का मूल प्रश्न 'मौसम बदलने की आहट' से गहरे स्तरों पर जुडा हुआ है। दोनों के बीच का केन्द्रीय प्रश्न एक ही है। दोनों की मूल चिंता परस्पर सामाजिक बदलाव से जुडी है। अनामिका की दृष्टि में स्त्रियां तो अपनी बेड़ियों को तोड़कर बनी–बनाई छवियों और शास्त्रीय बंधनों से बाहर निकल चुकी है। लेकिन उनकी अपेक्षा यह भी है कि समाज की दृष्टि में भी बदलाव आए। पितृसत्रा के दोहरे मानदंड बदले जाएं।

अनामिका जी की चिंता जायज है कि हमारे वर्तमान समय में सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि स्त्रियां तो 'ध्रुवस्वामिनी' जैसी कर–काठी पा गई है।, किंतु पुरूष अभी भी रामगुप्त की मनोदशा में ही हैं– वे चन्द्रगुप्त नहीं हुए। सचमुच चन्द्रगुप्त जैसे धीरोदत नायक तो केवल नाट्यशास्त्र के सैद्वान्तिक पृष्ठों तक ही सीमित है, आम जीवन में नही। आज के पुरूषों को प्रेमिका के रूप में 'बिखरी अलकें ज्यों तर्कजाल वाली इड़ा तो चाहिए, लेकिन पत्नी का रूप श्रद्धा वाला ही हो जो सदैव पुरूष के विश्वास रूपी पद तल में पीयूष स्त्रोत सी बहे। यह पुरूष की जो दोहरी मानसिकता है, जरूरत इसे बदलने की है।

इस पुस्तक में वे समन्वित नारीवाद के अर्न्तगत भारतीय देवियों के मानवीय सरोकार की बात करती है। समाज जिसे मिथकीय आवरण से ढंककर देवी मूर्ति के रूप में स्थापित कर चुका है, उसे अनामिका ने अपनी लेखनी से शापमुक्त करना चाहती है। अनामिका की लेखनी पौराणिक स्त्री चरित्रों शीशे जड़ित फ्रेम से बाहर निकालकर उनके मनोसामाजिक रूप उजागर करती है। जिसके द्वारा सीता, सावित्री की छवि को आदर्शवाद के रंग में रंगकर बेरंग कर दिया गया था। वे उन देवियों के भीतर छिपे चेतना तत्व को टटोलने की कोशिश करती है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त दिए गए उद्वरणों से पूरा का पूरा स्त्री आंदोलन इन्हीं सामाजिक और सांसकृतिक सवालों, दबावों पर केन्द्रित है। स्त्री चेतना का इतिहास इन्हीं कारणों, विचारों, विमर्शो और संघर्षो से बुना गया है।

आदिकाल से अब तक हुए स्त्री आंदोलन की पुस्तकों में एक–एक अध्याय स्त्री आग की ताप में सुलग रहा है। स्त्री आंदोलन की पुस्तकों को पढ़कर कोई भी न केवल स्थितियों को जान सकता है। बल्कि उनक स्थिति के प्रति विद्रोह भाव से उद्वेलित भी हो सकता है। इन पुस्तकों में न केवल स्त्री–लेखन और विर्मश है, बल्कि खून खौला देने वाली भोक्ता की पीड़ा, असहमति और विद्रोह के भाव भी है।

नारी न पुरूष से मुक्त हो सकती है और न ही प्रकृति प्रदत्त अनिवार्य भूमिका से। मुक्ति चाहिए उसे आज भी जीवित सड़ी–गली परम्पराओं से, कुप्रथाओं से और पुरूष की पुरातन तथा दूषित मानसिकता से। इस मुक्ति–संघर्ष के लिए कोई एक व्यापक योजना

नहीं निर्धारित की जा सकती। प्रत्येक वर्ग के परिवार की अपनी अलग समस्याएं होती है। जिन्हें विवेक के साथ ही सुलझाने का प्रयास करना होगा।

आज दुनिया को आलोडित कर रहा स्त्री–विर्मश स्त्री आंदोलन केवल स्त्री अस्मिता की पहचान हीं है बल्कि स्त्री संवेदना का विस्तार है। जमींन की उर्वरता और संवेदना के विस्तार को केन्द्र में रखकर अल–अलग शीषर्को के माध्यम से स्त्री रचनाशीलता पर बडी बारकी और गम्भीरता से विचार करती दिखाई देती है। नारी साहित्य लेखन एक और स्वातः सुखाय है तो दूसरी और जन हिताय हैं यद्यपि नारी लेखन आज स्पर्धा के युग में चुनौती है फिर भी उसे हर स्थिति का सामना करने में उसे वैशाखी की जरूरत नहीं। उन्हें निर्भयतापूर्वक सोचना और लिखना होगा। जो आज क जरूरत है। नारी–मुक्ति का संघर्ष लम्बा है। और इसे मुख्यतः नारी को ही लड़ना है। समाज व अपनी संस्कृति से जुड़ी वर्तमान परिवेश की चुनौतियॉ स्वीकार करके ही महिला सृजन सफल हो रह है। स्त्री–लेखन की चर्चा अब हर जगह होने लगी है। यह निश्चित रूप से महिला रचनाकारों के बढ़ते महत्व को रेखांकित करता है। लेखिकाओं की लेखनी में केवल पानी ही नहीं है बल्कि ऊर्जा संसाधन का महत्वपूर्ण स्त्रोत आग भी है। साहित्य में स्त्रियों की भूमिका, समाज में स्त्रियों की भागीदारी और स्त्रियों के प्रति समाज के बदलते नजरिये इन तीनों स्तरों के बदलाव की प्रकिया पर विचार–विमर्श किया गया है।

सन्दर्भ सूची

1. हिन्दी महाकाव्यों में नारी–चेत्रण डा0 श्यामसुन्दर व्यास, सत्यम प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ–51
2. समकालीन महिला लेखन डा0 ओमप्रकाश शर्मा, पूजा प्रकाशन नई दिल्ली
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास डा0 रामचन्द्र शुक्ला, राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली।
4. हिन्दी साहित्य वैचारिक पृष्ठभूमि लालचन्द गुप्त मंगल।
5. समीक्षा जुलाई–सितम्बर 2014 , संपादक – सत्यकाम पृष्ठ 20 से 27।
6. स्त्री विर्मश – विनय कुमार पाठक, भावना प्रकाशन दिल्ली–110091, प्रथम सं–2005 पृष्ठ सं. 06
7. दहेज के कॉटे, लेखिका विभा गुप्ता संजीव प्रकाशन, नई दिल्ली–110002
8. आधुनिक नारी दशा और दिशाएं डॉ. सुधा जैन सूर्य भारती प्रकाशन, नई सड़क दिल्ली–110–006
9. कृष्णा सोबती का रचना संसार डॉ. कुमारी मीना मीनाक्षी प्रकाशन, दिल्ली–110092
10. मौसम बदलने की आहट, लेखिका–अनामिका, दरियागंज नई दिल्ली–110002
11. मैत्रेयी पुष्पा– गुडिया भीतर गुडियॉ भूमिका अक्टूबर 2014–मार्च 2015 समीक्षा पेज–63,64

EDUINDEX

PUBLICATION CERTIFICATE

This publication certificate has been issued to

डॉ. मीना कुमारी

For publication of research paper titled

शिवमंगल सिंह सुमन के काव्य में देश में सपूतों और संस्कृति पुरूषों का अभिनन्दन

Published in

Drishtikon with ISSN 0975-119X

Vol:*12* issue: *5* Month: *May* Year: *2020*

Impact factor:*5.4*

The journal is indexed, peer reviewed and listed in UGC Care

Editor

Associate Professor
H.E.S.- I
Govt. College, Narnaul

Editor

www.eduindex.org
editor@eduindex.org

Note: This eCertificate is valid with published papers and the paper must be available online at the website under the network of EDUindex.

Drishtikon
(UGC Care Journal)

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-05
May-2020

शिवमंगल सिंह सुमन के काव्य में देश में सपूतों और संस्कृति पुरूषों का अभिनन्दन

डॉ. मीना कुमारी

सहायक प्रोफेसर

विभाग–हिन्दी

राजकीय महाविद्यालय नारनौल।

E.mail- drmeenakumariyadav@gmail.com

संस्कृति पुरूषों का अभिनन्दनः–

राष्ट्रीय चेतना से प्रभावित होकर सुमन जी ने देश के सपूतों और संस्कृति के उन्नायको का गौरवगान किया है। कविवर शिवमंगल 'सुमन' ने जिन सपूतों और संस्कृति पुरूषों का अभिनन्दन किया है उनमें प्रमुख नाम हैं– जयशंकर प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त, रवीन्द्रनाथ टैगोर, पढ़ीस, प्रेमचन्द, निराला, कालिदास, दिनकर, आचार्य शुक्ल, पंत आदि। किस रूप में और किस तरह उनका स्मरण किया है, उसका निरूपण इस प्रकार किया जा सकता है।:–

1. **मैथिलीशरण गुप्तः**– 'हिल्लोल' नामक काव्य संग्रह में सुमन जी ने मैथिलीशरण गुप्त पर एक कविता लिखी है जिसका नाम है 'गुप्त जी की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर'। इस कविता में कवि ने गुप्त जी को कवि, गायक, साधक, स्वर सत्ताधारी, अविचल–अचल, पुजारी, अनुरागी, वैरागी, योगी–सन्यासी, चिरगांव–निवासी आदि नामों से सम्बोधित किया है।। सुमन जी ने गुप्त के व्यक्तिगत की संघर्षशीलता को साहित्यिक महत्व और देन को भी व्यक्त किया है। और कविता के अन्त में कामना की गई है कि हे कवि तुम युग–युग तक जिओ और तुम्हारी साधना भी अक्षर–अमर हो जाये। कविता का अन्तिम छन्द द्रष्टव्य है।

आज तुम्हारे जन्म–दिवस पर बाल–वृद्व नर–नारी
चढ़ा रहे हैं श्रद्वाजलियां–वरण पर वारी
सहस–सहस साँसों से मिलकर निकल रहे है स्वर ये
कवि ! तुम युग–युग जिओ, जिए यह चिर–साधना तुम्हारी। (1)

Copyright©authors

Associate Professor
H.E.S.- I
Govt. College, Narnaul

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-05
May-2020

इस कविता में सुमन जी ने गुप्त जी निपट मस्ती और गायन के प्रति प्रतिबद्वता को भी उजागर करते हुए उनके विशिष्ट व्यक्तित्व को मुखरित किया है।

2. **जयशंकर प्रसादः**– जयशकर प्रसाद के असामयिक देहावसान पर 'हा प्रसाद।[1]' नामक कविता सुमन जी ने लिखी है। 'असमय यह कैसा दुख भाए का पुट देकर कवि ने प्रसाद जी के जीवनकम और कृतित्व कर्म का स्मरण किया है। कवि के निधन पर सुमन जी ने विधाता को धिक्कारते हुए लिखा है कि प्रसाद जी के निधन पर जड़–चेतन, विश्व–साहित्य, हिन्दी साहित्य आदि सब कुछ रो पड़ा कारण यह था कि प्रसाद जी जगती के आदर्श रूप थे, अभिनव युग के सूत्रधार थे, मृतप्राणों के उन्नायक थे, मानवता की पुकार थे।

जगतीतल के आदर्श रूप
ओ अभिनव युग के सूत्रधार
ओ मृतप्राणों के उन्नायक,
ओ तुम मानवता की पुकार
तुमको नभ तारक खोज रहे अगणित दृग द्वारो से निहार
असमय यह कैसा दुख भार ? (2)

3. **रवीन्द्रनाथ टैगोरः**– 'स्वर्गीय कवि–गुरू के प्रति' एक कविता टैगोर के स्मरण में लिखी गई है। यह कविता प्रलय–सृजन नामक काव्य संग्रह में संकलित है। इस कविता में सुमन ने टैगोर जी के सम्मोहनकारी व्यक्तित्व और कृतित्व का स्मरण किया है। इस कविता में उसने टैगोर जी को आर्य्र संस्कृति का प्रतीक, युग का संचित ज्ञान, भगीरथ की अमर तपस्या, गौतम का निर्वाण, वीणावादिनि की स्वर–लहरी, वाल्मीकि के छन्द, भारत के चन्द आदि कहा है। कवि ने उन्हें भारत के अभिमान से भी संबोधित किया है। कवि ने उन्हें स्वतन्त्रता सेनानी रूप का स्मरण किया है। इसी कम में उसने उनकी संकल्पना के शान्ति–निकेतन को भी ध्यान में लाने का प्रयास किया है। कविता के कुछ छन्द द्रष्टव्य है, जिनसे उनके अनूठे व्यक्तित्व का परिचय मिलता है–

आर्य–संस्कृति के प्रतीक तुम
युग के संचित ज्ञान

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-05
May-2020

भागीरथ की अमर तपस्या
गौतम के निर्वाण
खीचातानी के इस युग में
खूब निभाई टेक
जितनी जीभ प्रश्न उतने ही
उत्तर तुम थे एक

x x x x x

भ्रान्ति भरे जग के जीवन में
फैली आज अशान्ति
क्या न उसे फिर दे पाएगा
शान्ति निकेतन–शान्ति। 3

4. **पढ़ीसः–** पढ़ीस का पूरा नाम बलभद्र प्रसाद दीक्षित था। पढ़ीस जी आधुनिक अवधी के प्रथम तेजोमय कवि थे। वैसे तो उन्होंने खड़ी बोली, ब्रजभाषा तथा हिन्दी की अनेक विभाषाओं में काव्य रचना की है। लेकिन उनका मन अवधी की ही रचनाओं में अधिक रमण करता है। 'चकल्लस' उनकी ख्याति का आधार है। ऐसे कवि पर सुमन जी ने 'स्वर्गीय पढ़ीस जी की स्मृति में' एक कविता लिखी है। इस कविता के प्रारम्भ में ही सुमन जी ने पढ़ीस जी को भूमि–सुत की संज्ञा से अभिहित किया है। (4)

सुमन जी ने यह भी बताया है कि पढ़ीस जी ने युग जीवन के सच्चे कवि थे उनकी कविताओं में खेत खलिहान, श्रमिक का श्रम आदि अंकित हुआ है। इतना ही नहीं जनवाणी, लोकमंगल इनमें बडी शिद्दत से मुखरित हुआ है। कुछ छन्द द्रष्टव्य है–

जन–समाज के बीच अंकुरित
दिखा बीज युग कवि का
बोल उठा कवि–हृद्वय खेत खलिहान
श्रमिक के श्रम में

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-05
May-2020

ग्राम–हृदय परतंत्र देश का
कभी बोल पाया यदि
जनता का उच्छ्वसित कलेवर
हृदय खोल पाया यदि। 5

5. **प्रेमचन्दः–** कथा सम्राट प्रेमचन्द को लक्षित करके सुमन जी ने दो कविताएं लिखी है–

1. स्वर्गीय प्रेमचन्द जी के प्रति
2. मेरे कथाकार

उक्त दोनों कविताएं 'विश्वास बढता ही गया' काव्य में संकलित हैं। प्रेमचन्द पर रचित पहली कविता में कवि ने प्रेमचन्द को पद्दलित देश का स्वाभिमान, जनयुग–जागृति के प्रथम चरण, जनपथ स्रष्टा, श्रमिक वर्ग के सजीव–श्रम, संघर्षो के प्रतीक, नयी चेतना, नया विश्वास, रूढिवाद के विरोधी आदि बताया है। कवि ने यह भी कहा है। उनकी कृति में मातृभूमि की मिट्टी की सुगंधि मिलती है। कविता की कृछ पंक्तियां उदाहरण के रूप में देखी जा सकती है–

पददलित देश के स्वाभिमान
जनयुग–जागृति के प्रथम चरण
असमय वर डाला भरण वरण
तुम श्रमिक वर्ग के श्रम सजीव
चेतना नयी विश्वास नया
तुम रूढ़िवाद पर धन–प्रहार
हे व्रती! तुम्हारे व्रत में संचित
कोटि–कोटि कंठो को वाणी अनिर्वध
हे कृति, तुम्हारी कृति में मिलती
मातृभूमि की मिट्टी की सोंधी सुगंध। (6)

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-05
May-2020

'मेरे कथवार' नाम्नी कविता में कवि ने प्रेमचन्द को गिरा ज्ञान का गौरव, देश का स्वाभिमान चिर मूक के गान, जन–जन के हृदयहार कहकर अभिनंदित किया है। सुमन जी ने इस कविता में यह भी स्वीकार किया है कि प्रेमचन्द जी शोषित–दलित के प्राण थे, स्नेह के साकार रूप थे, पाप के विनाशक थे –

शोषित–दलित प्राण
अज्ञात, अनजान
तुमने दिया ज्ञान, तुमने किया प्यार
और कथाकार, मेरे कथाकार
म्लाष किया क्षार
तुम स्नेह–साकार
हे ज्योति आधार, शत्–शत् नमस्कार
मेरे कथाकार, मेरे कथाकार। (8)

6. <u>निरालाः–</u> लगता है कि सूयकान्त त्रिपाठी 'निराला' शिवमंगल सिंह 'सुमन' के सर्वाधिक प्रिय कवियों में से थे। इसलिए उन्होंने कविवर निराला पर विशिष्ट कविताएं लिखी है। सुमन जी द्वारा रचित निराला पर लिखित निम्नलिखित कविताओं का उल्लेख मिलता है–

1. युगान्तकारी कवि निराला के प्रति
2. महाप्राण के महाप्रयाण पर

उक्त कविता विश्वास बढ़ता ही गया काव्य संकलन में संकलित है। यह एक लम्बी कविता है। यह लगभग 11 पृष्ठों में है, जो सुमन जी ने निराला जी की 50 वीं वर्षगांठ पर लिखी थी। इस कविता में सुमन जी ने निराला के जीवन, उनके व्यक्तित्व उनके संधर्ष, अनेक कृतित्व तथा उनके साहित्यिक अवदान को चित्रित किया है। कविता के प्रारम्भ में कवि ने निराला को चिर–विदग्ध संबोधन से संबोधित किया है तथा उनके शैशव के संकलय तथा स्वरूप को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। 'सुमन' जी ने निराला को नवसृष्ट मानकर उनके मोहक व्यक्तित्व को इस प्रकार उजागर किया है।

वह कौन कली

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-05
May-2020

जो तुम्हें देख मुरकान उठी
वह कौन सुछवि
जो तुम्हें देखकर नहीं लूटी (10)

सुमन जी ने निराला के यौवन का भी बड़ा यथार्थ चित्रण किया है। कवि कहता है कि निराला का यौवन उद्दाम था। उसके समक्ष किसी के टिकने की हिम्मत नहीं थी। वे युग के दुर्जेय प्रवाह के समान थे जो विषमता के कगारों को अस्त–ध्वस्त कर रहा था। कवि यह भी मानता है कि निराला जी आजीवन एकाकी और अजनबी बने रहे। दर–दर भटकते रहे, कपोल गीले तथा आंचल भगा रहा, लेकिन ऐसा रूप उनका किसी को भी नहीं दिखा–

तुम एकाकी अजनबी बने
दर दर घूमें, भटके व्याकुल
सूने में सिसके अकुलाए
पर देख नहीं पाया कोई
गीले कपोल, भीगा ऑचल।

'मिट्टी की बारात' में समुन जी ने निराला के अवसान पर कविता लिखी है–'महाप्राण के महाप्रमाण पर'। कविता के प्रारम्भ में कवि दार्शनिक चेतना से युक्त होकर निराला जी का स्मरण करता है। और कहता है कि हे कविवर, जब तुम जीवित थे तब सुनने को जी करता था जब तुम चले गए तो गुनने का जी करता है चूंकि यह वास्तविकता है कि जो जलता है, वह बुझता है और जो फरता है, वह झरता है, यथा–

तुम जीवित थे तो सुनने को जी करता था
तुम चले गये तो गुनने को जी करता है
तुम सिमटे थे तो सहमी–सहमी ऑखे थी
तुम बिखर गये तो चुनने को जी करता है
यह दुनिया आनी–जानी होती है बाबा
जे जलता है, वह बुझता है
जे फरता है वह झरता है। (12)

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-05
May-2020

यह अपूर्ण गाथा जन–जन की
सम्मोहन की, संवेदन की
स्वर्ण–धरा के मधुर मिलन की
कल कोमल, कमनीय कल्पना
कंठ–कंठ गाए
यह दिन बार–बार आए (14)

8. **सुमित्रानंदन पंतः–** पंज जी द्वारा सचित कविता का नाम है 'कविवर पंत के जयंत्युत्सव पर, यह कविता सुमन जी द्वारा पंत की पचासवीं वर्षगांठ (29 मई 1950 ई0) पर पढ़ी गयी थी। इस कविता में कवि ने जीवन और कृतित्व पर प्रकाशा डाला है। इस दृष्टि से कविता के कुछ छन्द देखते ही बनते है। यथा–

सारा जीवन वनवास, मौन तप–साधन
उर्मिला सिसकती कहां सुमित्रानन्दन
अभिशाप अभावग्रस्त जीवन के हतक्षण
किस मेधनाद–वध हेतु कठिन प्रण पालन।
युग करवट का उच्छवास कि भूघर डोले
वीणा के पहले बोल तुम्ही में बोले
हो ! चिर–किशोर सौन्दर्य सृष्टि में निरूपण
पल्लव पल्लव पर किया तुम्हीं ने गुंजन। (15)

9. **आचार्य रामचन्द्र शुक्तः–** आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के महाप्रयाण पर सुमन जी ने यह कविता साहित्य जगत पर वज्रपात लिखी थी। इस कविता में कविता सुमन ने शुक्ल के देहावसान के समय का बड़ा कारूणिक चित्र निरूपित किया है। शुक्ल जी के साहित्यिक अवदान का स्मरण करते हुए सुमन जी ने लिखा है कि शुक्ल जी साहित्य के पुरूषोतम थे। उनकी भाष में नव स्फूर्ति थी, उन्होंने अरूप को रूप तथा उच्छृंखला को संयम से युक्त किया–

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-05
May-2020

यो साहित्यिक पुरूषोतम ने
कर दी अपनी लीला समाप्त ।
साहित्य जगत् पर वजपात।।
भर भाषा में नवस्फूर्ति शक्ति
तुमने अरूप को दिया रूप
रचना कुल उच्छृंलता में
तुम थे संयम के राम–रूप। (16)

कविता के अन्तिम चरण में पहुंच कर कवि शुक्ल जी के अमर कृतित्व का स्मरण करता है और उनकी अमर गीति का अंकन इस प्रकार करता है। उदाहरणार्थ–

इस नश्वर जग में देव ! तुम्हारी
चिंतामणि की ज्योति अमर ?
हे अमर अनामय संवेदन
चर–अचर समन्वित प्रीति अमर। (17)

10. **रामधारी सिंह 'दिनकर'**– शिवमंगल सिंह 'सुमन' ने दिनकर जी पर 'दिनकर के आकस्मिक अवसान पर एक कविता लिखी है। इस कविता में कवि ने दिनकर जी को 'युग का पुरूरवा कहा है इसके साथ कवि ने उनके पुंजीभूत पौरूष, हिन्दी–सेवा, कृतित्व, व्यक्तित्व आदि पर भी बड़ी सटीक बाते लिखी है। इस लेखन के द्वारा कवि ने दिनकर जी के अवदान को हमारे सामने रखा है। यथा–

जीवन भर
जोधा का जामा उतारा नहीं
अंगद के पॉव–सा
अडा रहा संजुग में
पलके बिछाए
परशुराम की प्रतीक्षा में
दिनकर हिमालय का

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-05
May-2020

अरत हिन्द महासागर में
कुंकुम के छन्दों में
मेधमंदु गर्जन बन। (18)

अन्त में कहा जा सकता है कि शिवमंगल सिंह ने अपनी कविताओं में राष्ट्रीय चेतना के सांस्कृतिक स्वरूप के अनेक रूपों का निरूपण किया है, इस निरूपण से यह स्पष्ट हो जाता है कि वे राष्ट्रीय चेतना के सच्चे कवि थे। राष्ट्रवासियों को चरित्रवान बनाना उनका लक्ष्य था तथा उन राष्ट्रभक्त–साहित्यसेवियों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करना वे अपना धर्म समझते थे। जिन्होंने किसी प्रकार से राष्ट्र के उन्नयन में अपना योगदान दिया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:–

1. सुमन समग्रः खण्ड–1
वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997
2. सुमन समग्रः खण्ड–2
वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997

Associate Professor
H.E.S.- I
Govt. College, Narnaul

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक

डॉ. प्रसून दत्त सिंह

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

डॉ. फूल चन्द

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

वर्ष : 12 **अंक** : 6 ❑ नवम्बर–दिसम्बर, 2020

दृष्टिकोण

संपादक मंडल

डॉ. अरुण अग्रवाल
ट्रेन्ट विश्वविद्यालय, पीटरबरो, ओंटारियो
डॉ. दया शंकर तिवारी
दिल्ली विश्वविद्यालय
डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ. प्रकाश सिन्हा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
डॉ. दीपक त्यागी
दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर
डॉ. अरुण कुमार
रांची विश्वविद्यालय, रांची
डॉ. महेश कुमार सिंह
सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, दुमका
डॉ. हरिश्चन्द्र अग्रहरि
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा
डॉ. पूनम सिंह
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
डॉ. एस. के. सिंह
पटना विश्वविद्यालय, पटना
डॉ. अनिल कुमार सिंह
जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा
डॉ. मिथिलेश्वर
वीर कुंअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
डॉ. अमर कान्त सिंह
तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर
डॉ. ऋतेश भारद्वाज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. स्वदेश सिंह
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. विजय प्रताप सिंह
छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

संपादकीय सम्पर्क:

448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-I, दिल्ली-110091
फोन : 011-22753916, 35522994 Mobile: 9710050610, 9810050610
e-mail : editorialindia@yahoo.com; editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com
Website : www.ugc-care-drishtikon.com

©Editorial India
Editorial India is a content development unit of Permanence Education Services (P) Ltd.

ISSN 0975-119X

नोट: पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

दृष्टिकोण

उपनिषदों में प्रतिपादित आत्मतत्त्व और ब्रह्म का सम्बन्ध–सावित्री 3192

भारतीय लोकतंत्र में जनता की भागीदारी–डॉ० संगीता कुमारी 3194

जोधपुर जिले में जलवायु परिवर्तन के तहत तापमान में परिवर्तन और वर्षा में बदलाव (1983 से 2017)–प्रेमा राम सांखला 3198

बिहार में जाति की राजनीति और चुनावों का इतिहास–रघुवीर कुमार रंजन; प्रो० मुनेश्वर यादव 3208

अनुसूचित जाति की बालिकाओं की शिक्षा के बाधक तत्व: जनपद जालौन के सन्दर्भ में–अजय कुमार अहिरवार; डॉ० राजीव अग्रवाल 3213

बाल विकास में पारिवारिक योगदान–डॉ० बाबू राम मौर्य; निक्की टोप्पो 3217

इतिहास, इतिहास लेखन और उसकी प्रक्रिया–प्रोफेसर (डॉ०) निधि रायजादा; सुषमा रानी 3220

रबीन्द्र नारायण मिश्रक उपन्यासमे प्रवासी-समस्या–पंकज कुमार पंडित; डॉ० मीनू कुमारी 3224

मध्यकालीन बिहार में इतिहास-लेखन और इतिहासकार: एक अध्ययन–डॉ० सुनील कुमार सिंह 3227

समावेशी विकास के तहत वरिष्ठ नागरिको की सामाजिक सुरक्षा: अवधारणा और चुनौतियां–मुक्ता सिंह गोठवाल; डॉ० नूरजहाँ 3230

प्रारंभिक बौद्ध धर्म का स्त्री विशयक चिन्तन: एक अवलोकन–डॉ० आनन्द कुमार त्रिपाठी 3235

राजस्थान के विभिन्न महाविद्यालयों के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में शारीरिक शिक्षा के प्रति छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्ति का तुलनात्मक विश्लेषण–डॉ० जी.एस. चौहान; देव कुंवर सोनी 3237

रेलवे कुलियो में शिक्षा, दक्षता एवं सांस्कृतिक पुर्नउत्पादन: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण–नीरज कुमार राय 3243

मानवीय संवदेनाओं के परिप्रेक्ष्य में चित्रा मुद्गल का उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा'–गीतांजलि 3247

सामाजिक सरोकारों में नारी–डॉ० वर्षा रानी 3249

समकालीन हिन्दी काव्य में प्रतिरोध का स्वरूप और उसकी सार्थकता–डॉ० चंदन कुमार 3253

सार्वजनिक वितरण प्रणाली में एक देश, एक राशन कार्ड की भूमिका–कुमोद कुमार; डॉ० मो० जमीलुर रहमान 3259

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009: मुद्दे और चुनौतियाँ–शशि प्रभा; डॉ० रेनू चौधरी 3263

वर्तमान औद्योगिक विकास और जलवायु परिवर्तन–डॉ० शिव कुमार सिंह 3269

कठगुलाब में स्त्री-विमर्श–डॉ० मीना कुमारी 3272

कठगुलाब में स्त्री-विमर्श

डॉ० मीना कुमारी

सहायक प्रोफेसर, विभाग - हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय, नारनौल

स्त्री विमर्श का मूल उद्देश्य स्त्रियों की अस्मिता की पहचान करना है और उनके अस्तित्व और अधिकारों को समाज के संज्ञान में लाना है। पुरूष प्रध ान समाज के बंधनों से रहित स्त्रियों को उनकी स्वतन्त्र और जीवंत अस्मिता से परिचित कराना स्त्री-विमर्श का मूल लक्ष्य है। इसलिए सीमोन डे बॉवोयर ने अपनी पुस्तक ''द सेकंड सेक्स'' में लिखा है कि जो कुछ भी पुरूषों द्वारा स्त्रियों के बारे में लिखा गया है उस पर शक किया जाना चाहिए क्योंकि लेखक न्यायधीश और अपराधी दोनों है।[1]

वर्तमान में आधुनिक हिन्दी साहित्य में नारी, चेतना और सर्जना के बीचों-बीच खड़ी दिखाई देती है। वैदिक काल नारी का उत्कर्ष काल रहा है किन्तु समय परिवर्तन के कारण नारी के पराभव और शोषण का युग प्रारम्भ हो गया।[2] आदिकाल के समय ऐसा भी साहित्य लिखा गया ''जाकि बिटिया सुन्दर देखी ताहि पै जाए धरे हथियार"[3] वाली कहावत चरितार्थ हुई।

भक्तिकाल में निर्गुण संत कवियों ने नारी को मुक्ति मार्ग में बाधा बता दिया। सुंदरदास के अनुसार - ''नारी विष का अंकुर विष की बेल है।"[4] रीतिकाल के कवियों ने जहाँ नारी के कामिनी रूप और प्रेमिका रूप का वर्णन किया लेकिन आधुनिक काल में भारतेन्दु जी ने स्त्री-शिक्षा के प्रचार हेतु 'बालबोधिनी' नामक पत्रिका का प्रकाशन किया तथा नर-नारी समानता एवं नारी मुक्ति का नारा दिया। द्विवेदी युग में कवियों ने माना समाज की उन्नति नारी को सम्मान दिए बिना हो ही नही सकती साथ ही साहित्य लेखन की कमान सुभद्रा कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा जैसी कवयित्रियों ने सम्भाली।

आधुनिक युग में हिन्दी साहित्य में विशेषत: यदि हम कथा साहित्य पर परिचर्चा करें तो पुरूष रचनाकारों की मान्यताओं के आगे लेखिकाओं ने स्त्री विमर्श को आगे बढ़ाने का काम किया जो इस वर्ग की प्रथम लेखिका के रूप में कृष्णा सोबती जी का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। उनके उपन्यास ''डार से बिछुड़ी" और ''मित्रों मरजानी" स्त्री-विमर्श के प्रारम्भिक कदम माने जाते हैं। इस कड़ी को आगे बढ़ाने वाली प्रमुख उपन्यासकार लेखिकाएं, उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग , चित्रा मुदगल, प्रभा खेतान, ममता कालिया आदि प्रमुख है। पुरूषों की उपेक्षा स्त्री लेखिकाओं ने स्त्री-लेखन पर अपनी लेखनी अधिक चलाई तथा नारी के जीवन के अनछुएं पहलुओं पर दृष्टिपात करते हुए नवीन रहस्य उजागर किए इसी श्रृंखला का एक महत्वपूर्ण उपन्यास है ''कठगुलाब"। ''कठगुलाब" उपन्यास पुरूष प्रधान समाज में स्त्रियों के दोहन-शोषण और मुक्ति-संघर्ष की कहानी सुनाता है। इस उपन्यास में पांच कथावाचक है। ये सभी पात्र स्वयं अपनी कहानी सुनाते है। जिनमें स्मिता, मारियन, नर्मदा, असीमा और विपिन। उपन्यास के सभी पात्र अपने-अपने अनुभवों पर स्त्री-जीवन के विभिन्न पहलुओं पर हमारे सामने अपने विचार रखते है। वास्तव में कठगुलाब उपन्यास स्त्रियों के अर्न्तमन की पीड़ा है। सभी का किरदार अलग है वैसे ही सभी पात्रों की पीड़ा भी अलग-अलग है। इस उपन्यास को पढ़ने के बाद ऐसा लगता है सभी स्त्रियों के जीवन में संघर्ष और पीड़ा होती है। उपन्यास की स्ित्रयां इसी संघर्ष और पीड़ा को अपने अनुभवों के आधार पर व्यक्त करती है।

उपन्यास की प्रमुख और अहम् पात्र स्मिता है, स्मिता स्वयं अपनी कहानी बताती है, हम दो बहने स्मिता और नमिता, स्मिता की माँ कोढ़ियों के अस्पताल में काम करती और पिताजी एक कारखाने के मैनेजर थे। माँ तो पहले ही मर चुकी थी और नमिता के विवाह के बाद पिताजी भी चल बसे। स्मिता को अपनी शादीशुदा बहन नमिता के घर शरण लेनी पड़ती है। स्मिता पढ़ लिखकर कुछ बनना चाहती है। लेकिन उसका जीजा जल्दी से उसकी शादी करवाना चाहता है और जब तक स्मिता उस घर में है तब तक उसका भोग करना चाहता है और मोटा, अधेड़ या गावदी लड़का जो बिना दहेज के शादी कर ले, उसे ही वह घर ले आता और स्मिता को लड़को को फंसाने के नुस्खे बताता, ''त्रिया चरित्र माई डियर" इस्तेमाल करके तो देखो दबंग से दबंग आदमी काठ का उल्लू बन सकता है। तेरे इन कठगुलाबों की तरह हँसने लगता सैक्स अपील बेवी: कल जब वह लड़का आए तो यू बेखयाली में हो, उसे छूते हुए गुजर जाना. ....."[5] स्मिता का जीजा थियोरी से प्रैक्टिकल पर आ जाता और स्मिता की मर्जी के खिलाफ उसे छूना अजीब-सा व्यवहार करताा, उसकी नजर स्मिता पर टिकी रहती और वह उस पर प्रतिदिन कसीदे कसता रहता।

एक दिन वह मौका पाकर स्मिता का बलात्कार करता है। ऐसे समय में उसकी बहन भी उसे बचा नही पाती और अपने पति की गलतियों पर पर्दा डालने की कोशिश करती है। जब स्मिता अपने जीजा की शिकायत पुलिस में करने जाना चाहती है तो नमिता उसे ही नसीहत देती है - ''नही पुलिस के पास गयी तो बदनामी के सिवा कुछ हासिल नहीं होगा। अकेली जान वे भी तेरा फायदा उठाने की कोशिश करेगें"[6]

नमिता स्मिता को कुछ पैसे देकर पढ़ाई के लिए कानपुर भेज देती है। स्मिता उपन्यास की पात्र हार मानने वालों में नही है मेहनत और संघर्ष के बल पर स्मिता बॉस्टन यूनिवर्सिटी में दाखिला पाती है' और अमेरिका चली जाती है। अमेरिका में साईक्याट्रिस्ट जिम जारविस से विवाह कर लेती है। स्मिता को इस बात का अहसास बहुत जल्दी ही जाता है कि जिम के लिए वह पत्नी कम और शोध का विषय अधिक, जिम के द्वारा स्मिता से उसके जीवन के विषय में बार-बार सवाल करना प्रेम के नाम पर मनोविश्लेषण का माध्यम बनाना स्मिता को उस पर हंसी आ जाती है इस बात से चिढ़ कर जिम स्मिता पर बैल्ट

से वार करते-करते उसका गाउन खींचकर उसका भोग करने की कोशिश करता है लेकिन इस बार स्मिता बंधनमुक्त थी ''उसने जिम को पटकनी देकर जमीन पर गिरा दिया, बैल्ट छीन ली और अच्छी प्रकार जिम की पिटाई की।"[7]

स्मिता उसके बाद अपना पर्स उठाती है और बाहर चली जाती है, अब स्मिता के पास शरण लेने के लिए एक ही जगह थी 'रिलिफ फॉर एब्यूज्ड विमेन' 'रॉ' नाम की संस्था जहाँ के दफतर में स्मिता काम करती थी। स्मिता परिस्थितियों से हार न मानकर उनसे संघर्ष करती है। स्मिता को अगली सुबह तेज दर्द के साथ बदन से खून गिरना शुरू हुआ तब स्मिता को महसूस हुआ कि जिम की दी हुई चोट कितनी विकराल थी। जब डॉक्टर ने कहा, ''गर्भपात हो गया है तो स्मिता के मुँह से एक प्रचंड चीख निकली," फिर एक बलात्कार। पहले अस्मिता पर अब शिशु पर। ''मेरी चीख ने अस्पताल के दरो-दरवाजे हिला दिए। बचपन के बँधे रूँधे बलात्कार के क्षण से, आँतों में घुटी जो पड़ी थी"[8] स्मिता सोचती है एक दरिन्दा इन्तकाम दिए बगैर मर गया ''ऐसी न हो कि मैं रोती-कलपती रह जाऊँ और मेरा अपराधी सजा पाने से पहले, एक बार फिर खुद अपनी मौत मर जाए"[9]

मारियान - 'कठगुलाब' की दूसरी कथावावक है वह अत्यन्त मेहनती व सजग स्त्री पात्र है' उसे भी शादी में पति से धोखा मिलता है, उसके बाद रिलीफ फॉर एब्यूल्ड वुमेन 'रॉ' में काम करती है। 'रा' में रहने वाली सभी औरतों की पुरूषों के बारे में एक ही राय थी ''कि मर्द नाम का प्राणी, खुदगर्ज और जालिम होता ही होता है"[10] लेकिन मारियान यह मानने को तैयार नहीं थी। इसलिए दूसरी शादी कर लेती है। इस उम्मीद के सहारे कि शायद इस बार उसकी भावनाओं और इच्छाओं का सम्मान हो पाऐगा। लेकिन इस बार भी ऐसा नहीं होता मारियान को दुख तो बहुत है, बार-बार मिले धोखे तथा प्रबल इच्छा चाहकर भी माँ नहीं बन पाने की पीड़ा, मारियान स्वयं कहती है - ''स्मिता समेत 'रॉ' की सब औरते जानती थी कि भरपूर चाहने के बावजूद मेरा बच्चा नहीं हुआ था। पर इन न होने के पीछे कितना विवाद और अपमान छिपा था, उसके बारें में मैनें कभी किसी से कुछ नहीं कहा था"[11]

मारियान का पहला पति इर्विन वादा करता है कि वे दोनों एक सांझा उपन्यास लिखेंगे। मारियान पूरे समर्पण भाव से उपन्यास के तथ्यों की सामग्री जुटा लेती है। जिसमें स्पेन की रूथ, स्कॉटलैंड की सूजन, इटली की एलेना तथा पोंलैड की रॉकजान के संघर्ष की दर्दभरी कहानी को प्रस्तुत किया है लेकिन उपन्यास जब प्रकाशित होता है तब उसमें केवल इर्विन का नाम आता है। मारियान का नहीं, उपन्यास बहुत प्रसिद्ध होता है। उपन्यास की ये सभी औरते एक खास पीढ़ी की नहीं बल्कि औरत की हर पीढ़ी का प्रतिनिधित्व कर रही थी।

''पूरी किताब में, आगे-पीछे कही मेरे योगदान के लिए आभार प्रकट नहीं किया गया था। समर्पण तक मेरे नाम नहीं था।"[12] इर्विन शुरू से ही बच्चा पैदा करने के खिलाफ था, जब शादी के चार साल बाद, मारियान प्रेगनेंट हुई और इर्विंग ने उसे एवॉर्शन कराने पर राजी किया। मारियान अगले पांच साल दुबारा गर्भवती नही हुई, जब भी मन में चाह उठती उसे शोध की भारी-भरकम किताबों के अनगिनत पन्नों के बीच दबा देती।

तीन साल बाद मारियान ने दूसरी शादी कर ली गैरी कपूर से ''मारियान ने दूसरी शादी करते ही ऐलान कर दिया था कि वह दनादन बच्चे पैदा करेगी, पांच साल में तीन बच्चों को जन्म देगी। लेकिन पांच की बजाय छः साल बीत गए। तीन क्या, एक भी बच्चे के डाइपर्स बदलने की नोबत नहीं आई।[13] मारियान पाँच साल में तीन बार गर्भवती हुई लेकिन तीनों बार गर्भपात हो गया। मारियान को एक बच्चा गोद लेने की सलाह गैरी देता है। लेकिन जब बच्चे को बाप का नाम देने की बात आती है तब गैरी मना कर देता है और ''एक महिने के भीतर उसका तबादला बॉस्टन से न्यू-जर्सी हो गया या उसने करवा लिया"[14]

नर्मदा - कठगुलाब उपन्यास की तीसरी कथावाचक है - और स्मिता जब अपनी बहन नमिता के घर जाती है तब उसकी मुलाकात नर्मदा से होती है, नर्मदा, नमिता के घर नौकरानी का काम करती है बचपन से ही बहुत दुःख उठाती है नर्मदा, के माता पिता की मृत्यु के बाद उसे और उसके पगले भाई को अपने जीजा के घर शरण लेनी पड़ती है। नर्मदा का जीजा गणपत आदमी नही कसाई है। बात-बात पर भाई-बहनों को पीटता है और जब नर्मदा शादी के लायक होती है तब उसका जीजा नर्मदा से जबरदस्ती शादी भी कर लेता है, जीवन में अनेक दुःखों और शोषण का शिकार नर्मदा के मन में ढेर सारी उलझने है।

''नर्मदा सोचती है किस्मत मेरी, न मरद मिला, न बालक, दो साल में, जने किती बार, वो मेरा भर्तार साथ रह लिया पर एक बार जो कोख हरी हुई हो, एक बालक हो जाता तो आप अपना कहने को कोई होता। दुनिया से ना डरती इसी कुठरिया में छाती ठोककर पाल पोस लेती"[15] इस प्रकार नर्मदा में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता आ जाने के बाद डरी सहमी नर्मदा का कायाकल्प हो जाता है। जब नर्मदा का जीजा उसे धमकी देता है तो नर्मदा का आक्रोश फूट पड़ता है -

''फिर कभी इस घर में आने की हिम्मत की तो टांगे तोड़ के सड़क पर फैंक दूंगी। भड़ुए, अपनी बीबी के पल्लू में जाके सो। मैं तेरी रखैल ना थी, तू मेरी रखैल था।[16] नर्मदा परिस्थितियों के आगे घुटने नहीं टेकती अपितू संघर्ष करती है। मुक्ति पाकर निम्न वर्ग की आर्थिक विपन्नता को झेलती हुई आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर आगे बढ़ती है। एक बच्चे के लिए निश्छल प्रेम, और एकनिष्ठ प्रेमिका के भी हमें दर्शन होते है। निम्नवर्गीय होते हुए भी नर्मदा उच्च गुणों से ओत प्रोत है।

असीमा - असीमा कठगुलाब उपन्यास की चौथी कथावाचक है। सभी स्त्री पात्रों में असीमा सबसे अलग है। उसका नाम ही उसके दबंग व्यक्तित्व का परिचय देता है। उसने माता-पिता द्वारा दिया गया नाम सीमा अर्थात सीमा में बंधकर घुट-घुट कर जीना पसन्द नहीं है। इसलिए उसने अपना नाम असीमा कर लिया। असीमा के पिता ने दो बच्चों का बाप होते हुए भी उसकी माँ (दर्जिन बीबी) को छोड़कर दूसरा विवाह कर लिया था। पहले तो असीमा अपने पिता को हरामी नम्बर एक का खिताब देती है और उससे नफरत करती है और बाद में जब उसका भाई (असीम) बड़ा हो जाता है और उसकी माँ उन्हे उसके पिता के बारे में बताती है तो वह माँ को छोड़कर अपने पिता के पास रहने चला जाता है। अब असीमा अपने भाई से भी नफरत करने लगती है। ''मुझे फौरन उनके पास जाना है," वह चीखा और माँ से टिकट के पैसे और बाप का पता लेकर चला गया, एक महिने बाद लौटे तो माँ को इतनी खरी-खोटी सुनाई कि मैनें फौरन उन्हे हरामी नम्बर दो का खिताब दे दिया''[17] घीरे-2 उसे पुरूष जाति से नफरत हो जाती है। स्मिता के प्रसंग में स्मिता के जीजा की धुनाई करके आती है। वह समाज के उस हर पुरूष से प्रतिशोध लेना चाहती है, जो स्त्रियों का शोषण करते है। फिर चाहे वह नर्मदा का जीजा हो या फिर असीमा

का खुद का भाई ऐसे पुरूषों से वह घृणा करती है और उन्हे 'हरामी' की उपाधि देती है। ''माँ मैनें'' पिता जी को माफ कर दिया। इसके सामने वह बहुत छोटा हरामी था।[18]

असीमा बचपन से लेकर अपनी माँ के संघर्ष को देख रही है। जब उसकी माँ उसके पिता से अलग हुई तो उसने असीमा के पिता से एक रूपया तक नही लिया था, स्वयं आत्मस्वाभिमान के साथ समाज के सामने सिर उठाकर आपने बच्चों का पालन पोषण किया। ''मेरी माँ का तो एक ही ना था, जिसका मैं सम्मान नहीं कर सकती जिसने मेरे आत्मविश्वास को चोट पहुंचाई उससे पैसा क्यों लू?"[19]

दर्जिन बीबी पूर्णत: भारतीय संस्कारों से ओत प्रोत और स्वाभिमानी नारी है साधारण भारतीय नारी के समान असीमा की माँ पति के विश्वासधात को चुपचाप सहन करते हुए अलग रहने का निर्णय लेती है, लेकिन अपने स्वाभिमान के कारण वह अपने पति के पैरो में गिड़गिड़ाती नहीं है। स्वाभिमानी होने के साथ-साथ आदर्शवादी और नैतिक मूल्यों का पालन करने वाली ''उन दिनों फेमिनिज्म पर जो किताब छपती" मैं पढ़ डालती पर अपने प्रश्नों के उतर कहीं नही मिले, अगर मर्द-औरत के बीच का रिश्ता शोषक-शोषित का रिश्ता है तो क्या उसका विकल्प लाज्बियनिज्म है?[20] असीमा बचपन से अपनी माँ के साथ रहते हुए भी माँ से बिलकुल विपरित थी। दर्जिन बीबी ने कभी किसी से मदद नहीं मांगी, उसने अपने दम पर एक साधारण दर्जिन से प्रसिद्ध बुटिक 'सलीका' को अपने दम पर खड़ा कर लेती है। जिसके कपड़े देश-विदेश में बिकते है।

ऐसा लगता है कि असीमा की माँ के माध्यम से मृदुला गर्ग ने भारतीय परिवेश पारिवारिक दायित्व, नैतिक और सामाजिक मूल्यों में विश्वास और उच्च संस्कारों को अभिव्यक्त किया है। किसी भी स्त्री को पहचान बनाने के लिए फेमिनिस्ट होना कतई जरूरी नही है। ऑक्सफोम की आर्थिक सहायता और आदिवासी स्त्रियों के सहयोग से स्मिता और असीमा दोनों गोघड के बन्थाल क्षेत्र में कुटुम्ब की स्थापना कर पाती है। निम्नवर्गीय स्त्रियों में आन्दोलनकारी फेमेनिस्त्रिक चेतना भरने की बजाय आत्मनिर्भरता एवं आत्माभिमान से दीप्त करने की शिक्षा दी है।

'कठगुलाब' उपन्यास की स्त्री पात्रों का आस्मितामूल्क विमर्श कठगुलाब की सभी स्त्री पात्रों में अस्मिता बोध बहुत गहन है, बात करें स्मिता की विपरित परिस्थितियां होने पर भी उसके जीवन का एक ही लक्ष्य था कि अपने बलात्कारी को सजा दें और आपना प्रतिशोध ले। इसके लिए कड़ी मेहनत करती है। बॉस्टन यूनिवर्सिटी में एडमिशन, मेहनत के बल पर नौकरी पाना, लेकिन जिम से शादी के बाद फिर एक बलात्कार स्मिता को अन्दर से तोड़ देता है, लेकिन फिर भी हार नहीं मानती जिम को सजा दिलाना चाहती है उस पर केश भी करती है।

स्मिता स्वयं कहती है ''कोई दिन ऐसा न जाता, जब मैं अपने इरादे को पूरा करने की योजना न बनाती, क्या-क्या ख्याल आते थे मन में..... मैं रणचण्ड़ी बनी उसका सेहर कर रही हूं कभी तलवार, कभी बरछी, कभी खड़ग, बचपन में सुनी पौराणिक कहानियों का हर दैवी हथियार, मेरे हाथों, उसका नाश कर चुका था।"

यदि बात करें हम मारियान की उपन्यास लिखने और जब इर्विन द्वारा उसे अपने नाम से प्रकाशित कराने के बाद मारियान इर्विन से झगड़ा कर लेती है, नाखूनों से उसके मुहँ को नोच लेती है। इतने वर्षो की मेहनत बेकार हो जाने के बाद भी हार नहीं मानती और स्मिता की कहानी पर उपन्यास लिखती है जो बहुत प्रसिद्ध होता है उसके बाद दो तीन उपन्यास और लिखती है और मारियान सोचती है कि आज नहीं तो कल लोग उसके उपन्यासों की शैली को पढ़कर सच जान जाऐगें कि इर्विन के नाम से प्रकाशित उपन्यास उसी का है। नर्मदा स्त्री पात्र भले ही अशिक्षित है लेकिन अस्मिता अत्यन्त गहरा है। जीवन के अनेक दुखों और शोषण की शिकार नर्मदा के हृदय में ढेर सारी उलझने है। लेकिन अपने प्रेमी के लिए वह अपने जीजा से भी उलझ जाती है, "उसके मारे तो मैंने अपने जालिम जीजा से भी लड़ाई मोल ले ली थी, बहोत समझो चाकू न घोंप दिया सीने में"[21]

असीमा से तो हम परिचित है ही मर्दो को पीटना उन्हें सजा देना और गर्व अनुभव करना अस्मिता बोध का ही परिचायक है। "अगर तूने स्मिता को ढूंढने की कोशिश की या फिर कभी अपनी बीबी पर हाथ उठाया तो समझ ले पीट-पीटकर तुझे अपाहिज बना दूंगी"[22] स्मिता के जीजा को पीटने से बड़ा सुख इस अहसास का था कि वह किसी मर्द को पीट सकती है।

"मर्दो की दुनिया में रहने के लिए होम साइन्स नहीं कराटे की जरूरत है"।[22]

निष्कर्षत: - मदुला गर्ग के उपन्यास का यदि गहराई से अध्ययन किया जाए तो यह स्पष्ट है कि जिस गहराई से उन्होने स्त्री के अन्तर्संबंधो को और उसकी पीड़ा को वाणी दी है। यह कार्य कोई महिला उपन्यासकार ही कर सकती है। मृदुला गर्ग ने नारी की नयी जीवन दृष्टि को अभिव्यक्ति दी है। भारतीय परिवेश और संस्कारों में रचा-बसा स्त्रीयों का चरित्र विपरित परिस्थितियों में भी सहजता से अपना विकास करता है और नारीवाद के नारे का सहारा लिए बिना नारी को सशक्त तरीके से आगे बढ़ने की प्ररेणा देता है। उपन्यास की सभी महिला पात्रों में अस्मिता की चाहत अधिक है। अपने अस्तित्व में ये महिलाएं गर्व से भरी हुई और कठिन परिस्थितियो में भी हारती नही, संघर्ष करती है। स्त्रियां किसी भी क्षेत्र में पुरूषों से कम नही है।

संदर्भ सूची:-

1. डॉ0 रोहिणी अग्रवाल - साहित्य का स्त्री स्वर, पृ0 9
2. डॉ0 ओमप्रकाश शर्मा - समकालीन महिला लेखन पृ0 21
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ0 रामचन्द्र शुक्ल पृ0 1199, राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली संस्करण-1996.
4. सुन्दरदास - सुन्दर ग्रन्थावली पृ0 राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली संस्करण - 1966.
5. मृदुला गर्ग - कठगुलाब प्रकाशन - भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली 2019.
6. कठगुलाब, पृ0 14
7. वही, पृ0 23

Multi-disciplinary International Journal

Certificate of Paper Publication

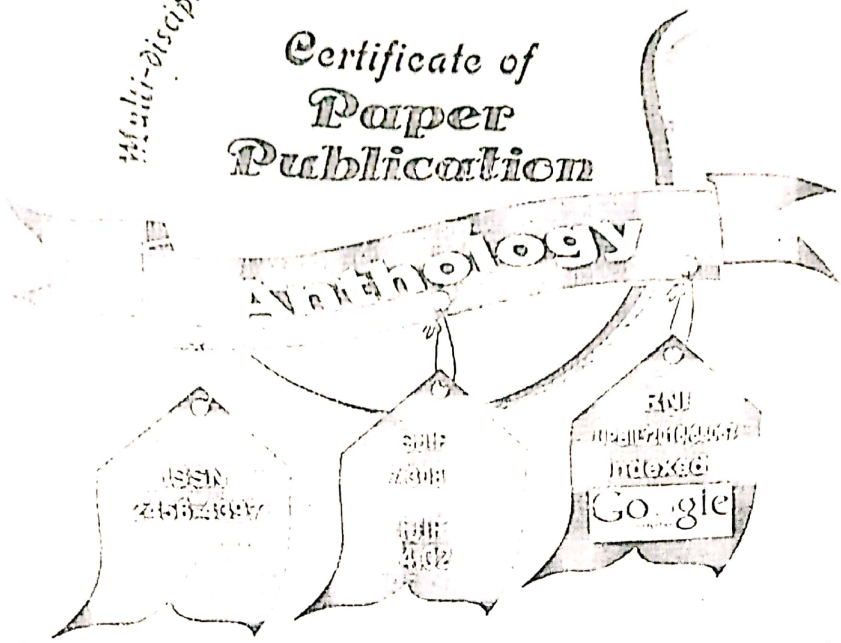

Anthology

Anthology The Research

This is to certify that the paper titled मृदुला गर्ग की कहानियों में चित्रित नारी जीवन

Author : मीना कुमारी

Designation : सहायक प्रोफेसर

Dept. : हिन्दी विभाग

College : राजकीय महाविद्यालय
नारनौल हरियाणा भारत

has been published in our Peer Reviewed International Journal
vol. VIII *issue* III *month* June *year* 2023
The mentioned paper is measured upto the required.

Dr. Ashok Kumar
President

Dr. Asha Tripathi
(Vice President)

Social Research Foundation

128/170, H-Block, Kidwai Nagar, Kanpur - 208011

ISSN: 2456-4397 RNI No. UPBIL/2016/68067 VOL.- VIII , ISSUE- III June - 2023
Anthology The Research

मृदुला गर्ग की कहानियों में चित्रित नारी जीवन से संबंधित समस्याएं
Problems Related To Life of Women Depicted In The Stories of Mridula Garg

Paper Id : 17761 Submission Date : 10/06/2023 Acceptance Date : 22/06/2023 Publication Date : 25/06/2023
For verification of this paper, please visit on http://www.socialresearchfoundation.com/anthology.php#8

मीना कुमारी
सहायक प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय
नारनौल,हरियाणा, भारत

सारांश

'चित्रकोबरा' तथा 'कठगुलाब' उपन्यास से चर्चित मृदुला गर्ग का प्रकाशित कहानी संग्रह है - 'मीरा नाची' इस कहानी संग्रह में छोटी बच्ची से लेकर साठ-सत्तर बरस की औरत को पात्र बनाकर नारी-मन की थाह लेने की कोशिश की है। कहानी संग्रह के पात्र किसी एक वर्ग या पीढ़ी से न आकर कई वर्गों और पीढ़ियों से एक साथ आये है। जिससे वे समाज की पारम्परिक, वर्तमान और भावी तस्वीर को उकेरने का काम कर पाये है। मृदुला गर्ग के इस कहानी संग्रह में स्त्री के जन्म, किशोरावस्था, गृहस्थ जीवन व वृद्धावस्था के क्रमिक चरणों में नारी-मन की प्रतिक्रियाओं व अनुभवों की पड़ताल है। इस कहानी संग्रह में लगभग 18 कहानियां है। लगभग सभी कहानी नारी की समस्याओं पर आधारित है। स्त्रीवादी विमर्श में अग्रणी स्थान रखने वाली मृदुला गर्ग ने नई कहानी के दौर के बाद हिन्दी साहित्य में भी विशिष्ट पहचान बनाई है।

सारांश का अंग्रेज़ी अनुवाद

'Meera Nachi' is a published story collection of Mridula Garg, famous for her novels 'Chitracobra' and 'Kathgulab'. The characters of the story collection do not come from any one class or generation but have come together from many classes and generations. Due to which they have been able to engrave the traditional, present and future picture of the society. This story collection by Mridula Garg explores the reactions and experiences of the female mind in the successive stages of birth, adolescence, home life and old age. There are about 18 stories in this story collection. Almost all the stories are based on the problems of women. Mridula Garg, who holds a leading position in feminist discourse, has made a special identity in Hindi literature after the era of Nai Kahani.

मुख्य शब्द

चित्रकोबरा, कठगुलाब, मृदुला गर्ग, मीरा नाची।

मुख्य शब्द का अंग्रेज़ी अनुवाद

Chitracobra, Kathgulab, Mridula Garg, Meera Nachi.

प्रस्तावना

कन्या जन्म की समस्या

'तीन किलो की छोरी' कहानी में हम देखते है कि कहानी की प्रमुख पात्र 'शारदा बेन ग्राम सेविका के रूप में काम करती है तथा लड़की लड़के का भेदभाव नहीं मानती। शारदाबेन प्रसव कराने का काम करती है।' नेकदिल है जो दूसरों के सुख-दुःख को अपना सुख-दुःख समझती है। कहानी में बेटी के जन्म पर किया गया कथन, "मरने दे हरामजादी को,....... हरामखोर, हमें पता था तीसरी भी छोरी जनेगी कमजात। डाल परे कमबख्त को। मरे तो अपने भाग से, जिए तो अपने भाग से।"[1] शारदाबेन के सामने समस्या यह है कि उस कन्या के माँ - बाप बच्ची के पालन पोषण के अधिकार को लेकर न केवल संवेदित है अपितु सचेष्ट भी है। जहां एक तरफ हम नारी शिक्षा, महिलाओं द्वारा किए गए अनेक साहसिक कार्य तथा हर क्षेत्र में बढ़ती नारी की भागीदारी की सराहना करते है। वहीं दूसरी तरफ अब भी बहुत से देहाती एवं पिछड़े इलाकों में कन्या के जन्म पर मातम छा जाता है। इतना ही नहीं सास-ससुर व पति कन्या जन्म के लिए स्त्री को जिम्मेदार ठहराकर उस पर अनेक अत्याचार करते है। लल्लीबेन की सास मनुबेन के माध्यम से मृदुला जी यह चित्रण समाज का उकेरती है कि कन्या को जन्म देने वाली माताओं को अनेक यातनाएं सहन करनी पड़ती है। 'तीन किलो की छोरी' में अशिक्षित शारदाबेन को सशक्त स्त्री की छवि देकर मृदुला जी ने इस मिथ को तोड़ा है कि शिक्षा और सशक्तिकरण का कोई संबंध नहीं होता है। यह कहानी शोषित और दलित नारी की व्यथा कथाएं है। प्रस्तुत कहानी संग्रह नारी के बहुरंगी रूप को सामने लाते हुए नारी दमन, संघर्ष, विद्रोह एवं स्वतंत्रता की छटपटाहट पूरे द्वन्द के साथ प्रस्तुत करता है। लल्लीबेन की सास ही नहीं उसका पति भी उसे गालियां देते हुए कहता है, "चुप चुड़ैल, छोड़ नौटंकी, सटओ। जनम पर हम दुध पहुंचाने कौन जावेगा तेरा बापू।"

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य मृदुला गर्ग की कहानियों में चित्रित नारी जीवन से संबंधित समस्याओं का अध्ययन करना है।

साहित्यावलोकन

दहेज की समस्या

Scanned with OKEN Scanner

RNI No. UPBIL/2016/68067
VOL.- VIII, ISSUE- III June - 2023
Anthology The Research

प्राचीन काल से ही हमारे समाज में लड़की के विवाह के समय दहेज देने की प्रथा बहुत पुरानी है, लेकिन प्राचीन काल में दहेज देते थे माता-पिता लेकिन उसमें परिवारजन अपनी खुशी और इच्छा से देते थे। लेकिन आज माता-पिता पर लड़का पक्ष की तरफ से दहेज की मांग की गई है। आज लड़के का पिता लड़की वालों से अपने लड़के का मूल्य मांगता है। समाज में चल रही कुप्रथा के कारण आज हर लड़की अपने स्वाभिमान पर एक प्रश्न चिन्ह पाती है। हर लड़की विवाह से पूर्व एक तरह की कुण्ठा अपने भीतर लेकर ही ससुराल जाती है।

शीलप्रभा वर्मा के अनुसार- "दहेज प्रथा सती प्रथा और कर्जे की किस्त में निकल जाते हैं।" नसीबन का बच्चा दो दिन से भूखा है, लेकिन घर में भैंस होते हुए भी उसे दूध नहीं मिला। तब नसीबन चीख पड़ती है, "चार हजार का कर्ज हुआ खरीदने पर। हर महीने किस्त चुकानी होती है। चारे की तलाश में डोलते दिन बीत जाता है। खली खिलाने की औकात नहीं। दूध उतरेगा कैसे? बहुत हुआ तो दो किल्लो, वह भी चार रूपये किल्लो की बिकवाई वाला। क्या करे गरीब आदमी।"[2] और इस प्रकार हम कहानी में देखते हैं कि आर्थिक अभाव के कारण नसीबन को अपना नवजात शिशु खोना पड़ता है।

आर्थिक विपन्नता की समस्या

पढ़ाया करती थी। लेकिन शादी के बाद
'यह मैं ही थी' नायिका उमा शादी से पहले कॉलेज में अर्थशास्त्र दस-पन्द्रह दिन किसी होटल में
वह पूरी तरह से अपने पति पर आश्रित हो जाती है। उमा पटना जाकर के अभाव के चलते वह ऐसा कर
रहकर दर्द शुरू होने पर अस्पताल में भर्ती होना चाहती है। लेकिन पैसे
नहीं पाती। मृदुला जी कहती है-

जो बचाया अपनी शादी में लगा
"पैसा कहां था, उसके पास? जो कमाया साथ साथ खर्च करती रही, अब वह पूरी तरह
दिया, थोड़ा बहुत फिर भी बचा रहा, शादी के बाद भोज-भजे में होम कर दिया।
मनीष पर निर्भर थी।"[3]

इसी प्रकार
कहानी 'यह मैं ही थी' कहानी के माध्यम से मृदुला जी ने आर्थिक समस्या को चित्रित किया। स्कूल की पढ़ाई छोड़
'अनाड़ी' कहानी में सुवर्णा आठ वर्ष की आयु में ही घर की विपन्नता को देखकर जब वह बारह वर्ष की हो जाती है
देती है और दूसरों के घर में नौकरानी का काम करने लग जाती है। झूला झूलने को और
तब भी उसका मन करता है स्कूल जाने को साथ की छोकरी-सहेली से खेलने को, मदद करना चाहती है
बिस्कुट-दूध खाने को, सुवर्णा जो कि दूसरों के घर में काम करके अपनी माँ की सुवर्णा को बचपन का सुख
और करती भी है वहीं दूसरी तरफ पारिवारिक आर्थिक विपन्नता के चलते
नसीब नहीं होता।

कामकाजी महिलाओं की समस्या

पिता की
'अनाड़ी' कहानी शहरी झुग्गी में रहने वाली सुवर्णा कामकाजी गरीब लड़की की कहानी है। स्कूल की
नौकरी छूट जाने के कारण घर की आर्थिक हालत को देखकर अपनी माँ की मदद के लिए सुवर्णा
पढ़ाई छोड़कर एक अमीर स्त्री के घर झाड़ू-पोंछा अर्थात नौकरानी का काम करने लगती है। सुवर्णा के भीतर
धीरे-धीरे उस औरत को अपने काम के चलते उसके लिए अनिवार्य बन जाती है। इससे सुवर्णा कई बार महसूस
आत्मविश्वास पैदा होता है और वह उस बाई से कई तरह की छूट लेती है। उसे यह सब नसीब
करती है कि औरों की तरह वह भी स्कूल जाए, लेकिन आर्थिक परिस्थिति के कारण आई, तीन छोड़ पांच घर
नहीं होता। सुवर्णा की आई कई घरों में काम करती थी। सुवर्णा के शब्दों में, " अब तो बारह की
में झाड़ू-फटका करने लगी। साथ में सुवर्णा, भांडे मलने को। आठ बरस की थी तब। साथ की छोकरी-सहेली
हो चली। कित्ती तो जिंदगी बीत गयी। फिर भी मन करता है न, इस्कूल जाने को, सुवर्णा को बचपन का
से खेलने को, झूला झूलने को, बिस्कुट-दुध खाने को ....।[4] इस प्रकार
सुख नसीब नहीं होता।

" जब तक महिलाएं अपने आजाद होने की
नारी के संदर्भ में लेखिका का स्वयं यह विश्वास है कि, अपने लिए स्वतंत्रता के आयाम खुद नहीं तय
जरूरत को नहीं समझेगी, अपनी लड़ाई खुद नहीं लड़ेगी, आना संभव नहीं।"
करेगी। तब तक दलित और कमतर शब्द के घेरे से बाहर

असफल प्रेम की समस्या

कहानी की नायिका मीरा
'चुक' कहानी भी विवाह और प्रेम को पूर्ण असंगत और व्यर्थ सिद्ध करती है। "पति का होना उसके लिए एक तरह का
स्वयं को न बेवकूफ औरतों में से एक मानती है उसके अनुसार

RNI No. UPBIL/2016/68067
Vol.-VIII, ISSUE-III June - 2023
Anthology The Research

अवसाद है जिसके माध्यम से उन्हें पैसा और ताकत दोनों मिलते हैं।"[7] एक कहानी पति परमेश्वर की खातिर बलिदान करने पर भी असफल रहने वाली स्त्री की मनोव्यथा को चित्रित करती है।

'तुम्हारी कुर्सी' कहानी की नायिका शेफाली एक युवक से प्रेम करती है और अपने घर की खिड़की से देखकर उसके वहां से गुजरने का इन्तजार करती है। उसकी सभी सहेलियों की शादी हो चुकी है, लेकिन शेफाली ने अब तक शादी नहीं की, एक दिन वह अपने प्रेमी से मिलने रेस्टोरेन्ट में जाती है लेकिन जब उसका प्रेमी मिलने नहीं आता तो वह ऑफिस पर आ जाती है वह सोचती है कि दुबारा उसका फोन आयेगा। फोन आता है शेफाली युवक को घर मिलने के लिए बुलाती है लेकिन वह अपने प्रेम को पाने में सफल नहीं होती। इस कहानी के द्वारा मृदुला जी प्रेम की असफलता को चित्रित करती है। 'अवकाश' कहानी की नायिका दो बच्चों की माँ होने पर भी अपने पति महेश को छोड़कर प्रेमी समीर की ओर आकर्षित हो जाती है।

घरेलू हिंसा की शिकार महिलाओं की समस्या

'तीन किलो की छोरी' तीसरी कन्या के जन्म के बाद कन्या की माँ के लिए कहा गया कथन, "मरने दे हरामजादी को हरामखोर, हमें पता था तीसरी भी छोरी जनेगी कमजात। डाल परे कमबख्त को। मरे तो अपने भाग से, जिए तो अपने भाग से।" परिवार जनों के द्वारा इस प्रकार का उपेक्षित व्यवहार और मानसिक पीड़ा तीन बेटियों की माँ को दी जाती है। वह चाहते हुए भी अपनी बेटी का पालन पोषण नहीं करती और शारदाबेन को सौंप देती है।

'चाहरी जन' कहानी में नंदिनी विवाह के सात वर्ष बाद भी माँ नहीं बनती तब नंदिनी के सास-ससुर के कटु वचन उसे मानसिक पीड़ा देते हैं और अप्राकृतिक प्रक्रिया का वह इस्तेमाल नहीं करना चाहती है। नंदिनी के कथन में, "नहीं चाहिए उसे बच्चा। नहीं जाएगी वह डाक्टरों के पास। नहीं करेगी किसी अप्राकृतिक प्रक्रिया का इस्तेमाल। उसकी गोद है, भरे या न भरे निर्णय लेने का अधिकार उसका है। सिर्फ उसका।" तुक कहानी की मीरा का पति जब ब्रिज के खेल में हार जाता है तो वह सारा गुस्सा मीरा पर उतारता है और भूखे भेड़िये के समान उसके शरीर पर टूट पड़ता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि मृदुला जी ने लगभग कहानियों में नारी की समस्याओं से अवगत कराने का उनका प्रयास सफल रहा है।

शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं की समस्या

आज आधुनिक और वर्तमानकालीन परिवेश में जहां एक ओर अशिक्षा के कारण नारी को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है तो दूसरी तरफ शिक्षित होकर भी नारी अनेक समस्याओं का सामना करती है। जहां एक ओर मृदुला जी ने 'अनाड़ी' कहानी में अशिक्षित नारी समस्या को चित्रित किया है वहीं दूसरी तरफ 'वह मैं ही थी', 'मेरीवाइर से' आदि कहानियों के माध्यम से शिक्षित नारी की समस्या को प्रभावी रूप से चित्रित किया है। नारी के जीवन में मातृत्व को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया है। 'चाहरी जन' कहानी में नंदिनी सात वर्षों बाद भी संतानहीनता के अभाव से पीड़ित है नंदिनी के सास-ससुर अप्राकृतिक रूप से बच्चा पैदा चिकित्सा के जरिये कराना चाहती है लेकिन नंदिनी इसके लिए स्पष्ट शब्दों में मना करती है। इस प्रकार हम कहानी में देखते है कि संतान प्राप्ति न होने के कारण नंदिनी को अपने सास-ससुर की कड़वी बातों को भी झेलना पड़ता है।

'तीन किलो की छोरी' कहानी में हम देखते है कि माता-पिता नवजात कन्या को अपनाने के लिए तैयार नहीं है बेटी के जन्म पर वह भी तीसरी परिवार में मातम छा जाता है। एक माँ कैसे अपनी नवजात कन्या को किसी दूसरे को दे सकती है लेकिन नारी के जीवन की विडम्बना देखिए कि जिस माँ ने तीसरी कन्या को जन्म दिया उसको ही परिवार के द्वारा दोषी माना जाता है और ऐसी परिस्थिति में शारदाबेन अशिक्षित होते हुए भी बच्ची के पालन-पोषण का भार अपने ऊपर लेती है।

अवैध यौन संबंधों की समस्या

अवैध यौन संबंध एक तरह समाज में एक बीमारी के रूप में फैल रहा है। या यूं कहें कि दिशा भ्रमित मानव जाति अवैध यौन संबंधों को बढ़ावा दे रही है। विपरीत लिंग आकर्षण तो प्राकृतिक है लेकिन एक [illegible] किसी पर स्त्री से संबंध बनाना सामाजिक नियमों के विरुद्ध है। मृदुला जी द्वारा रचित [illegible] कहानी इसका सटीक बैठती है।

कहानी में वीना के पति देवेन से अपर्णा अवैध संबंध रखती है इस कारण देवेन वीना की तरफ ध्यान न देकर वह अपर्णा की ओर अधिक आकर्षित होता है। मृदुला गर्ग जी कहानी में कहती है, "ओठों पर ... वह अपर्णा एक झटके के साथ दूर उड़ गया था और अपर्णा उसके सामने थी। उसे देखा था और ... किया था - दिलोदिमाग से न सही, देह की तमाम इन्द्रियों से देखा था, उसे सुना था, छुआ था

और स्वीकार किया था उसमें... देवेन और अपर्णा की नजदीकियां इतनी बढ़ जाती है कि अपर्णा देवन के बच्चे की माँ बनने वाली है, इसी कारण वह देवेन को शादी करने को कहती है तथा वीना को तलाक देने के लिए. जब देवेन वीना को तलाक देने से मना कर देता है और शादी करने से इन्कार कर देता है तो अपर्णा वीना पर हमला करवाती है। जिससे वीना की मृत्यु हो जाती है। देवेन वीना को अपने क्लीनिक में ले आता है लेकिन इस बात का आभास नहीं हो पाता कि जिस घायल स्त्री को वह क्लीनिक में लाया है वह कोई और नहीं उसी की पत्नी है। ये सब अवैध यौन संबंधों के चलते रिश्तों में आई दूरियों को दर्शाता है।

यौन शोषण की समस्या

मृदुला गर्ग द्वारा रचित 'तुक' कहानी में यौन शोषण की समस्या का मजबूती चित्रण किया है। कहानी की नायिका मीरा अपने पति से बहुत प्रेम करती है। लेकिन मीरा के पति को ताश के खेल की बुरी लत लगी हुई है। मीरा को भी वह ब्रिज का खेल सिखाना चाहता है लेकिन वह सीख नहीं पाती। जब भी नरेश खेल में हार जाता है तो उसका सारा गुस्सा घर आकर उतरता है विशेषकर मीरा की देह पर। मीरा के शब्दों में, ''यह कहकर वह भूखे भेड़िये की तरह मुझ पर टूट पड़ा। बिस्तर पर मेरी देह वैसी ही नग्न पड़ी थी, जैसी वह छोड़कर गया था। अपनी हार का तमाम गुस्सा उसने उस पर उतारा।'' इस प्रकार हम देखते है कि आज नारी को यौन शोषण की समस्या का अधिक सामना करना पड़ रहा है। इस समस्या को मृदुला जी ने अपनी कहानियों और कठगुलाब जैसे चर्चित उपन्यास में भी स्थान दिया है।

आजादी के पचास वर्षों के बाद भी नारी स्थिति और उसके प्रति पुरूष के दृष्टिकोण में अधिक अन्तर नहीं आया है। आज भी नारी शोषण के दृश्य आम जिन्दगी में देखे जा सकते है। यह शोषण, आर्थिक, दैहिक और मानसिक स्वरूप का है।

घुटन और एकाकीपन की समस्या

मृदुला गर्ग जी की पांच कहानियां 'हरी बिन्दी, 'चक्करघिन्नी,' 'तुक,' ग्लेशियर से,' 'यह मैं हूँ' विवाहित स्त्री की कथा कहती है। इन कहानियों में रूढ़िबद्ध जीवन शैली से स्वतंत्र होने की इच्छा है, जैसे 'हरी बिन्दी' 'ग्लेशियर से' और चक्करघिन्नी में आज़ादी से उत्पन्न आशंका, जो जोखिम उठाने से कतराकर सुरक्षित मुकाम तलाशने की तरफ प्रेरित करती है।

'हरी बिन्दी' की नारी परम्परा और दांपत्य की घुटन से मुक्त होकर वह 'स्व' व्यक्तित्व को पाना चाहती है। वह और उसकी हरी बिन्दी' नारी की बदलती मानसिकता का सशक्त प्रतीत है। कहानी की स्त्री पात्र का पति दूसरे शहर गया है वह वियोग के बदले राहत महसूस करती है और आज के दिन का उपयोग अपनी मर्जी से करना चाहती है।। उसकी चाहत व्यक्तित्व की खोज है।

'चक्करघिन्नी' कहानी की अन्तर्वस्तु न केवल विशिष्ट है अपितु लेखिका ने उसके जटिल रचाव को भी साधा है। कथा नायिका विनीता के माध्यम से पारम्परिक व आधुनिक स्त्री छवि का द्वन्द्व उजागर किया गया है। कहानी के पठान और उसके पौरूष का तपन में मोम-सी पिघलने वाली मिसेज दत्ता का चरित्र अत्यन्त सुंदर ढंग से चित्रित हुआ है। 'तुक' कहानी लाख कोशिश करने पर भी असफल रहने वाली स्त्री की मनोव्यवस्था को चित्रित करती है।

वर्ग - भेद की समस्या

'किस्सा आज का' कहानी में वकील और उसकी मालिशवाली अंगूरी दोनों स्त्रियां है। फिर भी आर्थिक वर्ग की भिन्नता से उनकी प्राथमिकताएं अलग-अलग है। इस कहानी में स्त्री विमर्श भी है और वर्ग भेद भी। यहां कहानी में मृदुला जी की सहानुभूति अंगूरी के साथ है, जो अनेक कष्ट सहने के बावजूद अपने ही वर्ग की रामकली का पता पुलिस को नहीं बताती।

'... ...' में लेखिका ने इस बात का खंडन किया है कि गरीब को कला का ज्ञान नहीं होता। वास्तव में कलात्मक रुचि का संबंध धन और शिक्षा से नहीं होता। यह दृष्टि जन्मजात प्राप्त होती है। 'मीरा नाची' ... की कहानी है। मीरा के पिता ने दूसरी औरत के लिए उसकी माँ को घर से निकाल दिया था। मीरा की विशेषता यह है कि वह कोई भी काम 'अपनी चाहत' के लिए ही करना चाहती है। क्योंकि अपनी चाहत में ही स्वाधीनता का भाव है। इसके बिना व्यक्ति का विकास सम्भव नहीं है।

निष्कर्ष

इन कहानियों के माध्यम से लेखिका ने स्त्री-विमर्श को रेखांकित किया है। मृदुला गर्ग ने संग्रह की भूमिका में लिखा है कि स्त्री मन के माध्यम से स्त्री-विमर्श तक पहुंचा जाना उचित है न कि स्त्री विमर्श की सैद्धांतिकी के माध्यम से स्त्री मन को पढ़ना। लेखिका की पहली रुचि है उनका स्त्री विमर्श संतुलित स्वरूप है।
लेखिका ने ... कहानी में ... के ... व्यक्तित्व की कहानी है। ... की मां आजादी की लड़ाई में हिस्सा

2456-4397
RNI No. UPBIL/2016/68067
VOL.- VIII , ISSUE- III June - 2023
Anthology The Research

...ने वाली अध्यापिका है। वह अपनी बेटी को आम गृहस्थ बनाकर जुझारू बनाती है। जो दुनिया को बदलने के सपने देखती है। यह कहानी मातृत्व के अनेक आयामों को खोलती है। एक तरफ वह बेटी की तरह संकेत करती है तो दूसरी तरफ उस तीक्ष्ण भावावेग को दर्शाती है। जो भीषण दुख की संभावना के बावजूद, माँ को बेटी की मुक्ति की राह में बाधा नहीं बनने देता।

मृदुला गर्ग एक कथाकार का यदि गहराई से अध्ययन किया जाए तो यह स्पष्ट है, कि जिस गहराई से उन्होंने स्त्री के अन्तसंबंधों को और उसकी पीड़ा को वाणी दी है। यह कार्य कोई महिला कथाकार ही कर सकती है। मृदुला गर्ग ने नारी की नयी जीवन दृष्टि को अभिव्यक्ति दी है। भारतीय परिवेश और संस्कारों में रचा बसा स्त्रियों का चरित्र विपरित परिस्थितियों में भी सहजता से अपना विकास करता है और नारीवाद के नारे का सहारा लिए बिना नारी को सशक्त तरीके से आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची 1. 'मीरा नाची', लेखिका मृदुला गर्ग, प्र वाग्देवी प्रकाशन बीकानेर - 334003 (राजस्थान)

...त टिप्पणी
1. तीन किलो की छोरी -
2. शहर के नाम -
3. 'वह मैं ही थी'
4. अनाड़ी
5. तुक
6. अदृश्य

अभिनन्दन ग्रन्थ समिति

प्रमुख संरक्षक : कैप्टन अजय सिंह यादव

संरक्षक

मन्त्री, हरियाणा सरकार

1. स्वामी रामदेव — पतांजलि योगपीठ (हरिद्वार)
2. स्वामी शरणानन्द — आश्रम दडौली, रेवाड़ी (हरियाणा)
3. स्वामी अग्निवेश — नयी दिल्ली
4. स्वामी आर्यवेश — नयी दिल्ली
5. स्वामी ब्रह्मानन्द — महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)
6. स्वामी धर्मदेव — पटौदी (हरिमन्दिर आश्रम, पटौदी)
7. महन्त प्रेमदास — सीहा, रेवाड़ी (हरियाणा)
8. महन्त चाँदनाथ योगी — अस्थल बोहर, रोहतक
9. महन्त चद्रदास — हुड़िया, अलवर (राजस्थान)
10. बहन कलावती — आश्रम गणियार, महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)

परामर्शदाता

1. श्री दीपेन्द्र सिंह हुड्डा — सांसद, रोहतक
2. राव इन्द्रजीत सिंह — सांसद, गुड़गाँव
3. श्रीमती अनिता यादव — संसदीय सचिव
4. श्री हरि राम आर्य — अध्यक्ष, स्वतन्त्रता सेनानी सम्मान समिति, हरियाणा
5. श्री पृथ्वीराज साहनी — मेयर दिल्ली
6. श्री यशपाल आर्य — पार्षद, दिल्ली
7. डॉ. कर्ण सिंह यादव — उपनिदेशक (शिक्षा) दिल्ली
8. डॉ. मीना यादव — लुहाना, हरियाणा
9. कर्नल दिलबाग सिंह — लुहाना, हरियाणा

सम्पादक

डॉ. राहुल

संयुक्त सम्पादक

1. डॉ. ईश्वर सिंह
2. प्रो. रमेश शर्मा

उप सम्पादक

1. श्री आर.सी. राव, आई.ए.एस.
2. श्रीमती क्रान्ति यादव, भारतीय राजस्व से.

कार्यकारी-सम्पादक

मेजर (डॉ.) टी. सी. राव

सत्यवीर नाहड़िया

भारतीय साहित्य-कला परिषद्

नयी दिल्ली

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षा जगत के चमकते सितारे

शिक्षा-जगत के चमकते सितारे, ताऊ हजारीलाल,
सीधे-सादे भोले-भाले, छोटा देवी के नन्दलाल।

बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि, शिक्षा पे लगाया ध्यान,
रहे खेलकूद में भी अग्रीण, सदा बढ़ा गौरव-मान।

पिशौरीलाल जी जैसे गुरु से लेकर शिक्षा-ज्ञान,
सन् उनसठ में लगी नौकरी, बने शिक्षक महान।

खूब पढ़ो, आगे बढ़ो, सभी आपस में एक बनो,
पढ़ने वाले मेरे बच्चों, सबसे पहले नेक बनो।

कर्तव्यनिष्ठा, बड़ा परिश्रम, जीवन का है ध्येय,
इन्हीं गुणों को धारण करके बने जगत के प्रेय।

सेवा-निवृत्ति के बाद भी किंचित किया नहीं विश्राम,
प्रधान बने गुरुकुल के कहे : आराम है हराम।

समझदार बनो, ईमानदार बनो, सदा जिम्मेवार बनो,
मेरे भारत के प्यार बच्चो, देश के पहरेदार बनो।

मोम-सा जलकर दीप्त किया हर कोना-कोना,
अहीरवाल का लाल हजारीलाल कितना सलोना।

मीना के प्रेरणा स्रोत बने हैं ये गुदड़ी के लाल,
आज कहीं है नहीं दीखता इन-सा अन्य मिसाल।

डॉ. मीना [illegible]
प्रवक्ता [illegible]
पी.के.एस.डी. कॉलेज, [illegible]